Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

وَسَخَّرَ لَكُمُ الَّيۡلَ وَالنَّهَارَ ۙ وَالشَّمۡسَ وَالۡقَمَرَ ؕ وَالنُّجُوۡمُ مُسَخَّرٰتٌۢ بِاَمۡرِهٖ ؕ اِنَّ فِىۡ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوۡمٍ يَّعۡقِلُوۡنَ ۔۱۳

सूरः नहल, आयत: 13

अनुवाद : और उसने तुम्हारे लिए रात और दिन, सूरज और चाँद को तुम्हारे अधीन कर दिया, और तारे भी उसी के आदेश से अधीन हैं। निश्चित रूप से इसमें उन लोगों के लिए बहुत बड़ी निशानियाँ हैं जो समझ रखते हैं।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

وَلَقَدۡ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّةٌ

वर्ष- 10
अंक - 6
मूल्य
600 रुपए
वार्षिक

साप्ताहिक क़ादियान

# बदर

Weekly
BADAR Qadian
HINDI

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

07 शाबान , 1446 हिज्री कमरी, 06 तब्लीग़ 1404 हिज्री शम्सी, 06 फ़रवरी 2025 ई.

## अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

## अहमदियत के केंद्र (मर्कज़) में क़ादियान दारुलअमान में 129वें जलसा सालाना का सफल और बरकतों भरा आयोजन

जब हम इंसाफ की नज़र से देखते हैं, तो पूरे सिलसिला-ए-नबुव्वत में सबसे ऊँचे दर्जे के जांबाज नबी, जीवित नबी और अल्लाह के सबसे प्रिय नबी को केवल एक ही शख्स के रूप में पहचानते हैं—वही नबियों के सरदार, रसूलुल्लाहों का फख्र, तमाम मुरसिलों का सर्ताज, जिनका नाम मुहम्मद मुस्तफा व अहमद मुजतबा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम है। जिनकी छत्रछाया में दस दिन चलने से वह रोशनी मिलती है, जो पहले हज़ारों वर्षों तक नहीं मिल सकती थी।

(इरशादाते आलिया सैय्यदना हज़रत मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का दावा है कि मैं ही वह मसीह मौऊद और महदी माहूद हूँ जिसकी आने की भविष्यवाणी आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने की थी, और अब कोई मसीह आसमान से नहीं आएगा, कोई महदी नहीं आएगा।

वे सभी भविष्यवाणियाँ पूरी हो चुकी हैं जो आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की पहचान के तौर पर बताई थीं। आपने दुनिया को, खासकर मुसलमानों को, यह दावत दी कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की भविष्यवाणियों को देखो, उन पर गौर करो और समझो कि इसी में सआदत है, इसी में अल्लाह तआला और उसके रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के आदेशों की तामील है।

अल्लाह तआला मुस्लिम उम्मत को अक़्ल और विवेक दे और वे बेवजह की मुखालफ़त से बाज़ आएं। सोचें कि क्या अल्लाह उनसे नहीं पूछेगा कि तुमने बिना तहक़ीक़ के मुखालफ़त क्यों की? क्योंकि अक्सर लोग बिना तहक़ीक़ किए सिर्फ़ मौलवियों की बातों पर विरोध करने लगते हैं। कुछ तो ग़ौर करो, अल्लाह तआला मुसलमानों को अक़्ल दे।

अल्लाह की तौहीद को दुनिया में क़ायम करने के लिए हमें वही कोशिश करनी चाहिए, जिसका हमसे तक़ाज़ा किया गया है और जो उसका हक़ है। हमें रसूलुल्लाहुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के झंडे को दुनिया में लहराने के लिए हर क़ुर्बानी के लिए तैयार रहना चाहिए। अल्लाह की तौहीद को क़ायम करने के लिए हर समय हर क़ुर्बानी के लिए तैयार रहें और तब तक चैन से न बैठें जब तक इस मक़सद को पूरा न कर लें, जिसके लिए हम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जमाअत में शामिल हुए हैं।

अल्लाह तआला क़ादियान में जलसे में शामिल होने वाले हर शख्स को अपनी हिफ़ाज़त और अमान में रखे। उन्हें हक़ीक़ी इस्लामी तालीम पर अमल करने और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से इश्क़ और मोहब्बत का इज़हार करने की तौफ़ीक़ दे। वे अपनी बैअत का हक़ अदा करने वाले बनें और उन तमाम बरकतों को लेकर लौटें, जिनके लिए वे इस जलसे में शामिल हुए हैं।

अहमदियत के केंद्र क़ादियान दारुलअमान में 129वें जलसा सालाना का सफल और बरकतों भरा आयोजन

शेष पृष्ठ 07 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - **निगरान बदर बोर्ड क़ादियान**

# ख़ुत्बः जुमअः

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया :

"ऐ इब्न-ए-ऊफ़! इस झंडे को ले लो और फिर तुम सब अल्लाह के रास्ते में जिहाद के लिए निकल जाओ और काफ़िरों से लड़ो। लेकिन ध्यान रखना, कोई बेईमानी मत करना, न किसी वादे को तोड़ना, न दुश्मन के मरे हुए शरीरों को नुक़सान पहुंचाना और न बच्चों को क़त्ल करना। यह अल्लाह का हुक्म है और उसके नबी की सुन्नत।"

इस रिवायत में शायद रावी से भूलवश औरतों का वर्णन छूट गया है, वरना दूसरी जगह साफ़तौर पर आता है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम जब कोई दस्ते को रवाना करते थे तो यह भी ताकीद फ़रमाते थे कि औरतों को क़त्ल न करना, न बूढ़े-पेड़ों को, और न ऐसे लोगों को जो अपनी ज़िंदगी धार्मिक सेवा के लिए वक़्फ़ किए हुए हों।

सिरया ज़ैद बिन हारिसा रज़ियल्लाहु अन्हो, सिरया वादी अल्-क़ुरा, सिरया अब्दुर्रहमान बिन औफ़, सिरया अली बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हो और सिरया हज़रत अबू बकर ज़ियल्लाहु अन्हो के कारण और हालात-ओ-वाक़ियात का बयान।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो के इरशाद के मुताबिक़, तक़सीम-ए-मुल्क के वक़्त 313 दरवेश क़ादियान में मुकीम रहे।

श्रीमान तैय्यब अली साहब बंगाली उन दरवेशों में से आख़िरी थे जिनका इंतेक़ाल हो गया। अब क़ादियान में और कोई दरवेश नहीं रहा।

और क़ादियान का यह पहला जलसा है जो किसी भी दरवेश के बिना हो रहा है। यह आज से शुरू हो रहा है।

अब क़ादियान में रहने वाली नई नस्ल का काम है कि अपने इन क़ुर्बानी करने वाले बुज़ुर्गों की रिवायतों को क़ायम रखते हुए वफ़ा और इख़लास से क़ादियान में अपनी ज़िंदगियां गुज़ारें। अल्लाह तआला उन्हें तौफ़ीक़ अता करे।

श्रीमान तैय्यब अली साहब बंगाली दरवेश क़ादियान, श्रीमान मिर्ज़ा मुहम्मदुद्दीन नाज़ साहब सदर सदर अंजुमन अहमदिया रब्वा पाकिस्तान और श्रीमान अक मरात ख़ाकीएव साहब नेशनल सदर जमाअत अहमदिया तुर्कमेनिस्तान का ज़िक्र-ए-ख़ैर और नमाज़-ए-जिनाज़ा ग़ायब।

**ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मौ'मेनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 27 दिसम्बर 2024 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)**

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ

आज भी कुछ सरियाओं का वर्णन करूंगा। इतिहास में एक सरिया का उल्लेख मिलता है जो सरिया ज़ैद बिन हारिसा रज़ियल्लाहु अन्हो के नाम से जाना जाता है। यह सरिया जमादीउल्-आखिरा, 6 हिजरी में बनू जुज़ाम की ओर हिस्मा में हुआ। हिस्मा, बनू जुज़ाम का एक शहर था जो मदीना से आठ रातों की दूरी पर स्थित था। उस समय के सफ़र के हिसाब से यह सफर काफी लंबा था।

अल्लामा इब्न क़य्यिम ने ज़ादअल् मआद में कहा है कि यह सरिया निस्संदेह सुलह-ए-हुदैबिया के बाद हुआ, यानी 7 हिजरी में।

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हज़रत साहबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि., पृष्ठ 681)

(सुबुलुल् हुदा वल् रिशाद, खंड 6, पृष्ठ 89, दारुल कुतुब अल् इल्मिया, बैरूत)

(फ़रहंग सीरत, पृष्ठ 102, ज़वार अकैडमी, कराची)

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हो ने भी विभिन्न ऐतिहासिक पुस्तकों से लेकर इस पर टिप्पणी की है। आपने फ़रमाया :

"इस सरिया की तारीख़ के संबंध में एक समस्या है जिसका उल्लेख आवश्यक है। इब्न साद और उनके अनुसरण में अन्य अहल-ए-सीर (सीरत लिखने वाले) ने इस सरिया की तारीख़ जमादी अल-आखिरा 6 हिजरी लिखी है और इसे सही माना गया है। लेकिन अल्लामा इब्न क़य्यिम ने ज़ाद अल्-मआद में स्पष्ट किया है कि यह सरिया 7 हिजरी में सुलह-ए-हुदैबिया के बाद हुआ था।"

आपने आगे लिखा :

"ख़ाकसार की राय में एक व्याख्या ऐसी है जिसे अल्लामा इब्न क़य्यिम ने नज़रअंदाज कर दिया है। हो सकता है कि दहिया कलबी शामी साम्राज्य में सुलह-ए-हुदैबिया से पहले भी व्यापारिक उद्देश्य से गए हों और उस समय उन्होंने क़ैसर से भेंट की हो। फिर सुलह-ए-हुदैबिया के बाद वे अल्लाह के रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) का ख़त लेकर गए हों।"

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पृष्ठ 682)

सरिया के हालात और वाक़ियात के बारे में आगे यह बयान मिलता है :

इब्न-ए-इस्हाक ने लिखा कि रिफाआ बिन ज़ैद जुज़ामी अपनी क़ौम के पास अल्लाह के रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) का ख़त लेकर आए। आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने उन्हें इस्लाम की दावत दी और उन्होंने इस्लाम क़बूल कर लिया। इसी दौरान हज़रत दहिया बिन ख़लीफ़ा कलबी क़ैसर रोम से वापस आ रहे थे। क़ैसर ने उन्हें तोहफ़े और कपड़े दिए थे। रास्ते में हुनेद बिन औस और उसका बेटा औस बिन हुनीद उनसे मिले और हमला करके उनका सारा सामान छीन लिया।

यह ख़बर इस्लाम क़बूल कर चुके बनू जुज़ाम के क़बीले बनू दुबयब को मिली। उन्होंने हुनीद और उसके बेटे के ख़िलाफ़ लड़ाई की और दहिया का सामान वापस ले लिया। फिर हज़रत दहिया रज़ियल्लाहु अन्हो ने रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) से हुनीद और उसके बेटे के ख़िलाफ़ कार्रवाई की दरख़्वास्त की।

रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने हज़रत ज़ैद बिन हारिसा रज़ियल्लाहु अन्हो को 500 आदमियों के साथ भेजा। आप रात को चलते और दिन में छुपते। उन्होंने हुनीद और उसके बेटे के ठिकाने पर सुबह-सुबह हमला किया। इस हमले में दुश्मनों का सफ़ाया हुआ, हुनीद और उसका बेटा मारे गए।

इस जंग में 1000 ऊंट और 5000 बकरियां ज़ब्त की गईं। 100 औरतों और बच्चों को क़ैदी बनाया गया।

(सब्लुल् हुदा वल् रिशाद , खंड 6, पृष्ठ 88, दारुल कुतुब अल् इल्मिया, बैरूत)

(फ़रहंग-ए-सीरत, पृष्ठ 243, 101, ज़वार अकैडमी, कराची)

इस हमले के बाद क़बीला बनू जुज़ाम की शाखा बनू दुबैयब के मदीना आने का ज़िक्र मिलता है।

"अभी ज़ैद मदीना नहीं पहुँचे थे कि क़बीला बनू दुबैयब के लोगों को, जो क़बीला बनू जुज़ाम की शाखा थे, ज़ैद की इस मुहिम की खबर मिल गई। वे अपने सरदार रिफ़ाआ बिन ज़ैद के साथ हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) की खिदमत में पहुंचे और कहा :

या रसूलुल्लाहुल्लाह! हम मुसलमान हो चुके हैं और हमारी बाक़ी क़ौम के लिए भी अमन (सुरक्षा) की लिखित इजाज़त मिल चुकी है। जो लोग अभी मुसलमान नहीं हुए, उनके लिए भी यह अमन की लिखित इजाज़त है। लेकिन आपके भेजे हुए लश्कर ने हमला करके हमारी क़ौम के कुछ लोगों को क़त्ल कर दिया, कुछ को क़ैदी बना लिया और ग़नीमत हासिल कर ली। जबकि हम तो मुसलमान हो चुके हैं और उनके बारे में भी अमन का हुक्म है। तो फिर हमारे क़बीले पर हमला क्यों हुआ?

हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया: 'हाँ, यह बात सही है।' आपने कोई दलील नहीं दी और फ़रमाया: 'तुम सही कह रहे हो। लेकिन ज़ैद को इसका इल्म नहीं था।' और उन लोगों की शहादत पर आपने बार-बार अफ़सोस का इज़हार किया।

इस पर रिफ़ाआ के साथी अबू ज़ैद ने कहा :

'या रसूलुल्लाहुल्लाह! जो लोग मारे गए हैं, उनके लिए हमारी तरफ़ से कोई मांग नहीं है। यह ग़लतफ़हमी का हादसा था। लेकिन जो लोग ज़िंदा हैं और जो सामान ज़ैद ने हमारे क़बीले से लिया है, वह हमें वापस मिलना चाहिए।' हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया: 'हाँ, यह बिल्कुल सही है।' आपने तुरंत हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो को ज़ैद के पास भेजा और अपनी तलवार निशानी के तौर पर दी। साथ ही हुक्म दिया कि इस क़बीले के जो क़ैदी और सामान पकड़े गए हैं, उन्हें छोड़ दिया जाए। ज़ैद ने यह हुक्म मिलते ही सभी क़ैदियों को छोड़ दिया और ग़नीमत का माल भी वापस कर दिया।"

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हज़रत साहबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि., पृष्ठ 681-682)

यह एक ज़बरदस्त मिसाल है जो इस्लाम के उस ऊँचे मापदंड को दर्शाती है, जिसे वह स्थापित करना चाहता है। आज जब मुसलमान भी आपसी दुश्मनी में एक-दूसरे को क़त्ल कर रहे हैं, इस मिसाल से हमें समझ में आता है कि उस दौर में संधि वाले लोगों के साथ कितना अच्छा व्यवहार होता था।

सरिया वादी अल-क़ुरा हज़रत ज़ैद बिन हारिसा रज़ियल्लाहु अन्हो के एक और सरिया का भी ज़िक्र मिलता है। यह सरिया वादी अल-क़ुरा में रजब 6 हिजरी में हुआ।

(शरह ज़रकानी, खंड 3, पृष्ठ 133, दारुल कुतुब अल् इल्मिया, बैरूत)

यह सरिया सरिया हिस्मा के लगभग एक महीने बाद हुआ। हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने हज़रत ज़ैद बिन हारिसा रज़ियल्लाहु अन्हो को वादी अल-क़ुरा की ओर भेजा।

वादी अल-क़ुरा मदीना के उत्तर में शाम की दिशा में लगभग 350 किलोमीटर की दूरी पर स्थित था।

(मुअजम अल्-मआलिम अल-जुग़राफ़िया, पृष्ठ 250, दार मक़्का लिलनशर वत-तौज़ीअ, 1982)

एक रिवायत में है कि वहाँ क़बीला मज़हिज़ और क़ुज़ाआ के लोग इकट्ठा थे।

(सब्लुल् हुदा वल् रिशाद , खंड 6, पृष्ठ 93, दारुल कुतुब अल् इल्मिया, बैरूत)

लेकिन इब्न हिशाम ने लिखा है कि वादी अल-क़ुरा में बनू फ़ज़ारा के साथ सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो का मुकाबला हुआ, जिसमें कई सहाबा शहीद हुए और ज़ैद बिन हारिसा रज़ियल्लाहु अन्हो भी गंभीर रूप से घायल हुए।

(अस-सीरतुन्नबविया ले-इब्न हिशाम, पृष्ठ 875, दारुल कुतुब अल् इल्मिया, बैरूत)

सरिया अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हो इस सरिया का ज़िक्र शाबान 6 हिजरी में दूमतुल जंदल की ओर हुआ। यह जगह मदीना के उत्तर में, शामी सीमा के पास थी और मदीना से लगभग 450 किलोमीटर दूर थी।

(दायरा-ए-मआरिफ़ सीरत-ए-मुहम्मद रसूलुल्लाहुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम खंड 7, पृष्ठ 249)

इब्न इसहाक और मोहम्मद बिन उमर ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत की है कि रसूलुल्लाहुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हो को बुलाया और फ़रमाया :

"तुम तैयारी कर लो। आज या कल मैं तुम्हें अल्लाह की मर्ज़ी से एक सरिया में भेजने वाला हूँ।"

(सब्लुल् हुदा वल् रिशाद , खंड 6, पृष्ठ 93, दारुल कुतुब अल् इल्मिया, बैरूत)

इस सरिया की तैयारी और रवानी के बारे में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हो ने एक दिलचस्प वाक़िया बयान किया है : "एक बार जब हम कुछ लोग, जिनमें हज़रत अबूबकर रज़ियल्लाहु अन्हो, उमर रज़ियल्लाहु अन्हो, उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो, अली रज़ियल्लाहु अन्हो, और अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हो शामिल थे, रसूलुल्लाहुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) की खिदमत में बैठे थे। एक अंसारी युवक ने पूछा : 'हे रसूलुल्लाहुल्लाह! मोमिनों में सबसे अफ़ज़ल कौन है?' आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया : 'वह जो सबसे अच्छे अख़लाक वाला हो।'

युवक ने फिर पूछा : 'सबसे ज़्यादा मुत्तक़ी कौन है?'

आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया: 'वह जो मौत को ज़्यादा याद करता हो और उसकी तैयारी करता हो।

(अल्लाह का डर रखते हुए उसके हुक्मों को मानना और उसके अधिकार अदा करना ही मौत की तैयारी है।)

इस पर वह अंसारी युवक खामोश हो गया और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हमारी तरफ़ मुख़ातिब हुए और फ़रमाया: "ऐ मुहाजेरीन के गिरोह!" फिर आपने कुछ नसीहतें फरमाईं :

"पांच बुराइयां ऐसी हैं जिनसे मैं अल्लाह से पनाह मांगता हूं और यह दुआ करता हूं कि वे कभी मेरी उम्मत में पैदा न हों।"

यह बुराइयां अगर किसी कौम में पैदा होती हैं, तो वह कौम तबाह होकर रहती है।

पहली बुराई: "कभी किसी कौम में बेहयाई और बदकारी इस हद तक नहीं फैलती कि वे उसे खुलेआम करने लग जाएं, तो इसके नतीजे में ऐसी बीमारियां और वबाएं पैदा होती हैं जो उनसे पहले लोगों में नहीं होती थीं।"

यह बात आज हम दुनिया में आम तौर पर देख रहे हैं। रसूलुल्लाहुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने इससे पनाह मांगी थी। मुसलमानों को ख़ास तौर पर इस पर ग़ौर करना चाहिए।

दूसरी बुराई: "कभी किसी कौम में तोलने और नापने में बेईमानी की आदत पैदा नहीं होती कि इसके नतीजे में उस कौम पर क़हत, परेशानियां, मुश्किलें और शासकों के जुल्म नाजिल न हुए हों।"

मुसलमानों को ख़ास तौर पर इस बात पर ग़ौर करना चाहिए क्योंकि यह बुराई अब उनमें भी आम हो चुकी है।

तीसरी बुराई: "कभी किसी कौम ने ज़कात और सदकात की अदायगी में कोताही और लापरवाही नहीं की कि इसके नतीजे में उन पर बारिशों की कमी न हो गई हो। यहां तक कि अगर अल्लाह को अपने बनाए हुए जानवरों और मवेशियों का ख़्याल न हो, तो ऐसी कौम पर बारिशें पूरी तरह बंद हो जाएं।"

यह अल्लाह के अज़ाब की निशानी है। इससे भी पनाह मांगनी चाहिए। चौथी बुराई: "कभी किसी कौम ने अल्लाह और उसके रसूलुल्लाह के साथ किए गए अहद (संधि) को नहीं तोड़ा कि उनके दुश्मनों में से कोई गैरकौम उन पर मुसल्लत (हावी) न कर दी गई हो, जो उनके हक छीनने लगे।"

आज के मुसलमानों की हालत देखकर यह साफ़ समझ में आता है कि यह बुराई उनमें पैदा हो चुकी है। अल्लाह रहम करे और उन्हें सही राह पर लाए।

पांचवीं बुराई: "कभी किसी कौम के उलमा और इमामों ने शरियत के खिलाफ़ फतवे देकर उसे अपने मतलब के मुताबिक़ बदलने की कोशिश नहीं की कि उनके बीच आपसी लड़ाई और झगड़ों का सिलसिला शुरू न हो गया हो।"

यह आज मुसलमानों में आम तौर पर फ़िरकापरस्ती (विभाजन) में नज़र आता है।

हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) की यह नसीहत कौमों की तरक्क़ी और उनके पतन के कारणों पर बेहतरीन रौशनी डालती है। अगर मुसलमान इसे समझें, तो आज के दौर में भी यह उनके लिए सबक़ है।

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हज़रत साहबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि., पृष्ठ 713-714)

सिरिया (मुहिम) के हालात और वाक़ियात: हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हो बयान करते हैं कि हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हो को आदेश दिया कि वे रात को दूमतुल जंदल की ओर रवाना हों। उनके लश्कर का पड़ाव जुर्फ़ नामक स्थान पर था और लश्कर में 700 आदमी थे। जुर्फ़, मदीना से तीन मील उत्तर की ओर स्थित था।

(सब्लुल् हुदा वल् रिशाद , खंड 6, पृष्ठ 94, दारुल कुतुब अल् इल्मिया, बैरूत)

(फ़रहंग-ए-सीरत, पृष्ठ 114, ज़वार अकैडमी, कराची)

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हो ने लिखा है :

"अब इस्लाम का प्रभाव तेज़ी से फैल रहा था। अरब के दूरदराज़ इलाकों में इस्लाम की तबलीग़ (प्रचार) पहुंच रही थी। लेकिन इसके साथ दूर-दराज़ इलाकों में इस्लाम के खिलाफ़ विरोध भी बढ़ रहा था। ऐसे लोग जो इस्लाम की तरफ़ झुकाव रखते थे, उन्हें उनके क़बीले के लोग ज़ुल्मों का शिकार बनाते थे। इस डर से बहुत से कमज़ोर तबियत लोग इस्लाम का इज़हार नहीं कर पाते थे।"

"इसलिए अब जंग की मुहिमों में एक नई वजह शामिल हो गई। ऐसे क़बीलों की ओर फौजी दस्ते भेजे जाने लगे, जिनमें कुछ लोग इस्लाम की तरफ़ झुके हुए थे, लेकिन ज़ुल्मों के डर की वजह से इस्लाम क़ुबूल नहीं कर पाते थे।"

"यह दस्ते धर्म की आज़ादी कायम करने के लिए भेजे जाते थे, जिस पर इस्लाम ने ख़ास ज़ोर दिया है। इसी मकसद से हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने 6 हिजरी के शाबान महीने में हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हो की कमान में एक फौजी दस्ता दूमतुल जंदल की तरफ़ रवाना किया।"

हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हो से मुख़ातिब हुए और फ़रमाया :

"इब्न-ए-अऊफ़! मैं तुम्हें एक सरिया (मुहिम) का अमीर बनाकर भेजना चाहता हूं। तुम तैयार रहो।"

दूसरे दिन सुबह हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हो आपकी खिदमत में हाज़िर हुए। आपने अपने हाथों से उनका अमामा (पगड़ी) बांधा और हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हो को हुक्म दिया कि एक झंडा उनके सुपुर्द कर दें।

इसके बाद आपने हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हो की सरपरस्ती में सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो के एक दस्ते को रवाना करते हुए फ़रमाया :

"ऐ इब्न-ए-अऊफ़! इस झंडे को ले लो और अल्लाह के रास्ते में जिहाद के लिए निकल पड़ो। काफ़िरों से लड़ो लेकिन ध्यान रहे :

कोई बेईमानी न करना। कोई वादा ख़िलाफ़ी न करना। दुश्मनों के मरे हुए शरीरों को नुक़सान न पहुंचाना।

बच्चों को क़त्ल न करना। यह अल्लाह का हुक्म है और उसके नबी की सुन्नत है।"

इस रिवायत में शायद रावी से भूलवश औरतों का ज़िक्र छूट गया है। अन्य जगहों पर स्पष्ट रूप से आता है कि जब आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) किसी दस्ते को रवाना करते थे, तो ताकीद करते थे :

औरतों को क़त्ल न करना। बूढ़े या कमजोर लोगों को क़त्ल न करना।

न ही उन लोगों को, जिनकी ज़िंदगी धार्मिक सेवा के लिए वक़्फ़ हो। इसके बाद आपने हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हो को हिदायत दी कि वे दूमतुल जंदल की तरफ़ जाएं और कोशिश करें कि मामला सुलह से हल हो जाए। आपने फ़रमाया:

"अगर वे लड़ाई-झगड़े से दूर होकर आज्ञापालन स्वीकार कर लें, तो यह सबसे बेहतर है।" इसके साथ आपने कहा:

"अगर वे इस्लाम स्वीकार कर लें, तो उनके सरदार की बेटी से शादी कर लेना।"

इसके बाद यह दस्ता 700 सहाबा के साथ दूमतुल जंदल की ओर रवाना हुआ। यह इलाका अरब के उत्तर में, ताबूक से उत्तर-पूर्व की ओर, शाम की सीमा के पास स्थित था।

मामला सुलह से हल हुआ जब यह इस्लामी लश्कर दूमतुल जंदल पहुंचा, तो शुरू में वहां के लोग लड़ाई के लिए तैयार नज़र आते थे औरमुसलमानों को तलवार से डराने की कोशिश करते थे। लेकिन हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हो के समझाने पर उन्होंने अपना इरादा बदल दिया। कुछ दिनों बाद वहां के सरदार अस्बग़ बिन उमर कलबी, जो एक ईसाई थे, इस्लाम में दाखिल हो गए।

उनकी क़ौम के कई अन्य लोग, जो पहले ही इस्लाम की तरफ़ झुके हुए थे, मुसलमान हो गए। जो अपने धर्म पर क़ायम रहे, उन्होंने भी इस्लामी सरकार के तहत आज्ञापालन स्वीकार कर लिया।

अच्छी तरह से मुहिम का समापन इस तरह यह मुहिम अच्छे तरीके से पूरी हुई। हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हो ने अस्बग़ बिन उमर की बेटी तुमाज़िर से शादी की और मदीना वापस लौट आए।

बरकतों की कहानी :

अल्लाह के फज़ल और रसूलुल्लाहुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) की दुआओं की बरकत से, हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हो और तुमाज़िर के घर एक बेटा पैदा हुआ। उनका नाम अबू सलमा ज़ुहरी था। वे इस्लाम के ख़ास फ़िदाई बने और इल्म और फ़ज़ीलत में इतना ऊंचा मकाम पाया कि अपने समय के सबसे बड़े उलमा में गिने जाते थे।

अबू सलमा ज़ुहरी का उल्लेख: इब्न साद ने लिखा है :

"كَانَ ثِقَةً فَقِيهًا كَثِيرَ الْحَدِيثِ"

(अर्थ: अबू सलमा एक भरोसेमंद, बड़े फकीह और बहुत ज़्यादा हदीस बयान करने वाले थे।)

जब सईद बिन आस पहली बार मुआविया बिन अबी सुफ़ियान की तरफ़ से मदीना के गवर्नर बने, तो उन्होंने अबू सलमा को मदीना का क़ाज़ी (जज) बनाया।

अबू सलमा 72 साल की उम्र में 94 हिजरी में वफ़ात पा गए। (तबक़ातुल् कुबरा, खंड 5, पृष्ठ 118, 120, दारुल कुतुब अल् इल्मिया, बैरूत)

सिरिया हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो की तरफ़ से फदक की मुहिम फदक की तरफ़ मुहिम (शाबान 6 हिजरी) :

हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो को 100 आदमियों के साथ फदक में बनू सआद बिन बकर की तरफ़ भेजा।

फदक : यह मदीना से 6 रातों की दूरी पर खैबर के पास स्थित था। 7 हिजरी में ग़ज़वा-ए-खैबर के मौके पर यह इलाका बिना लड़ाई के फतह हो गया था। फदक खजूरों और खेती के लिए मशहूर जगह थी। आज इसे अल-हायत कहते हैं।

मुहिम का मकसद हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) को ख़बर मिली कि इस क़बीले ने एक लश्कर जमा किया है और यह दुश्मन यहूदियों की मदद करना चाहता है।

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो रात में सफर करते और दिन में छुपते।

(सब्लुल् हुदा वल् रिशाद , खंड 6, पृष्ठ 97, दारुल कुतुब अल् इल्मिया, बैरूत)

(फ़रहंग-ए-सीरत, पृष्ठ 298, ज़वार अकैडमी, कराची)

(मुअजम अल-मआलिम अल-जुग़राफ़िया-सीरत अल्-नबविया, पृष्ठ 235, दार मक़्का लिलनशर वत-तौज़ीअ, 1982)

सीरत ख़ातमन (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) में इस घटना का वर्णन है :

"मदीना में यहूदी कौम पर उनकी अपनी गद्दारी और फसाद फैलाने की वजह से जो तबाही आई थी, वह पूरे अरब के यहूदियों के लिए एक कांटे की तरह चुभ रही थी। ग़ज़वा-ए-बनू-क़ुरैज़ा के बाद, जब मदीना में यहूदियों का सफ़ाया हो गया, तो ख़ैबर की बस्ती, जो हिजाज़ के यहूदियों का सबसे बड़ा केंद्र थी, इस्लाम के खिलाफ़ गुप्त साज़िशों का गढ़ बन गई।"

ख़ैबर के यहूदी, जो स्वभाव से अत्यंत द्वेषपूर्ण, ईर्ष्यालु और अन्यायी थे, इस्लाम को मिटाने और मुसलमानों को समाप्त करने की कोशिशों में लगे रहते थे। बनू सआद और यहूदियों की साज़िशें।

शाबान 6 हिजरी में, हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) को सूचना मिली कि क़बीला बनू सआद बिन बकर और ख़ैबर के यहूदियों के बीच मुसलमानों के खिलाफ़ साज़िशें हो रही हैं। यह भी बताया गया कि बनू सआद ख़ैबर के यहूदियों की मदद के लिए अपनी ताकत इकट्ठा कर रहे हैं।

इस पर, हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो की सरपरस्ती में एक दस्ते को रवाना किया। यह दस्ता दिन में छुपता और रात में सफ़र करता हुआ फदक के पास पहुंचा, जहां यह लोग इकट्ठा हो रहे थे।

गुप्तचर पकड़ा गया और हमला मुसलमानों को वहां एक बदवी व्यक्ति मिला, जो बनू सआद का जासूस था। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो ने उसे गिरफ़्तार कर लिया और उससे जानकारी ली। पहले तो उसने अनजान बनने की कोशिश की, लेकिन माफ़ी का वादा मिलने पर उसने सारी बात बता दी।

इसके बाद मुसलमानों ने उस जासूस को गाइड बनाया और वहां पहुंचे जहां बनू सआद के लोग जमा थे। मुसलमानों ने अचानक हमला कर दिया। इस अचानक हमले से बनू सआद के लोग घबरा कर भाग निकले।

माल-ए-ग़नीमत और वापस लौटना हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो ने माल-ए-ग़नीमत इकट्ठा किया और मदीना लौट आए। इस तरह यह खतरा अस्थायी रूप से समाप्त हो गया।

(सीरत ख़ातमन (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम), हज़रत साहबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद रज़ियल्लाहु अन्हो, पृष्ठ 716)

सरिया हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो इस सरिया का उद्देश्य बनू फ़ज़ारा की तरफ़ था। यह सरिया 6 हिजरी में हुआ। बनू फ़ज़ारा का क़बीला वादी अल्-क़ुरा में आबाद था। वादी अल-क़ुरा मदीना के उत्तर में, शाम की ओर लगभग 350 किलोमीटर की दूरी पर स्थित था।

(मुअजम अल-मआलिम अल-जुग़राफ़िया फी अस-सीरत अल्-नब्वी, पृष्ठ 250, दार मक़्का लिल् नशर वत-तौज़ीअ, 1982)

कुछ स्रोतों में उल्लेख है कि यह सरिया हज़रत ज़ैद बिन हारिसा रज़ियल्लाहु अन्हो की कमान में हुआ था।

(तबक़ातुल् कुबरा, खंड 2, पृष्ठ 69, दारुल कुतुब अल् इल्मिया, बैरूत)

(सीरत इब्न हिशाम, पृष्ठ 875, दारुल कुतुब अल् इल्मिया, बैरूत)

सही मुस्लिम और अबू दाऊद के अनुसार सही मुस्लिम और सुन्नन अबू दाऊद के अनुसार, हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को इस सरिया का अमीर नियुक्त किया था।

सही मुस्लिम की रिवायत के अनुसार, ईयास बिन सलमा बयान करते हैं :

"मेरे पिता हज़रत सलमा बिन अक़वा रज़ियल्लाहु अन्हो ने बताया कि हम ने बनू फ़ज़ारा से जंग की और हमारे अमीर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो थे।"

हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने पानी के करीब रात के आखिरी पहर में पड़ाव डाला और सुबह के वक्त चारों तरफ से हमला किया। उन्होंने दुश्मन के लोगों को क़त्ल किया और महिलाओं और बच्चों को क़ैदी बना लिया।

बनू फ़ज़ारा की औरत और उसकी बेटी हज़रत सलमा रज़ियल्लाहु अन्हो बताते हैं :

"मैंने देखा कि दुश्मन की एक महिला, जिसकी एक सुंदर बेटी थी, पहाड़ पर चढ़ने की कोशिश कर रही थी। मैंने तीर चलाकर उन्हें रोका और उन्हें हांकते हुए हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के पास ले आया। "

हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने उस महिला की बेटी मुझे तोहफे के तौर पर दे दी। जब हम मदीना लौटे, तो रसूलुल्लाहुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने उस लड़की को लिया और उसे मक्का के लोगों के पास भिजवा दिया, ताकि बदले में मुसलमान क़ैदियों को छुड़ाया जा सके।

(सही मुस्लिम, किताब अल-जिहाद, हदीस 4573)

सरिया का नारा और हज़रत सलमा का बहादुरी भरा योगदान इस सरिया में मुसलमानों का नारा था: अमित अमित (मारो, मारो)।

हज़रत सलमा रज़ियल्लाहु अन्हो कहते हैं:

"उस दिन मैंने अपने हाथों से सात (एक रिवायत के अनुसार नौ) दुश्मनों को क़त्ल किया।"

(सब्लुल् हुदा वल् रिशाद , खंड 6, पृष्ठ 92, दारुल कुतुब अल् इल्मिया, बैरूत)

इस समय मैं कुछ दिवंगत व्यक्तियों का उल्लेख करना चाहता हूं।

पहला उल्लेख: श्रीमान तैय्यब अली साहब बंगाली (दर्वेश क़ादियान) 11 दिसंबर को, 97 वर्ष की आयु में उनका निधन हुआ।

इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन

उनका जन्म बांग्लादेश में हुआ था। 1942 में उन्होंने ढाका में बेअत फॉर्म भरकर अहमदियत स्वीकार की। 1945 में पहली बार क़ादियान के जलसे में शामिल हुए और हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो से मुलाकात का सम्मान पाया।

क़ादियान से उन्हें इतनी मोहब्बत हो गई कि वापस अपने वतन नहीं लौटे। उन्होंने क़ादियान में रहकर दो वर्षों तक देहाती मुबल्लेगीन की विशेष कक्षा में शिक्षा प्राप्त की। 1947 में देश के विभाजन के समय उन्होंने क़ादियान में रहने की अनुमति मांगी, जो स्वीकार कर ली गई।

दर्वेशी के दौर में सेवाएं: उन्हें विभिन्न स्थानों पर सुरक्षा ड्यूटी करने का मौका मिला।

सदर अंजुमन अहमदिया के विभिन्न कार्यालयों में सेवाएं दीं।

1955-56 में, जब जमाअत के आर्थिक हालात कमजोर थे, तो दर्वेशों से कहा गया कि वे अपनी आजीविका स्वयं तलाशें।

उन्होंने दारुल-मसीह के बाहर चाय की दुकान खोली और अक्सर मेहमानों व गरीबों को मुफ्त चाय पिलाते।

उन्होंने केरल की एक तलाकशुदा महिला, आमना साहिबा से शादी की। उनकी पहले से एक बेटी थी, जिसे तैय्यब अली साहब ने पाला।

ख़ास घटनाएं:

कुछ समय पहले उनके घुटनों में गंभीर दर्द हुआ और चलना-फिरना मुश्किल हो गया। डॉक्टरों ने ऑपरेशन की सलाह दी, लेकिन उन्होंने इसे ठुकरा दिया और अल्लाह से दुआ की।

एक रात उन्होंने ख्वाब में देखा कि हज़रत मसीह माहूद अलैहिस्सलाम उन्हें बहिश्ती मक़बरा की जड़ी-बूटियां खिलाते हैं।

इसके बाद उनका दर्द धीरे-धीरे ठीक हो गया, और वे मस्जिद अक़सा व मस्जिद मुबारक में नियमित नमाज़ के लिए जाने लगे।

खेलों में उनकी रुचि थी और वे युवाओं की हौसला-अफ़ज़ाई करते थे। इससे बच्चों की तरबियत भी होती थी।

आखिरी दर्वेश: हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो के निर्देशानुसार, विभाजन के समय 313 दर्वेश क़ादियान में रहे। तैय्यब अली साहब इन दर्वेशों में आखिरी व्यक्ति थे। उनके निधन के बाद अब क़ादियान में कोई दर्वेश नहीं रहा।

क़ादियान के लिए नई पीढ़ी का कर्तव्य:

अब क़ादियान में रहने वाली नई पीढ़ी का काम है कि वे इन क़ुर्बानी देने वाले बुज़ुर्गों की परंपराओं को कायम रखें और वफ़ादारी व ख़ुलूस के साथ क़ादियान में अपनी ज़िंदगियां गुजारें। अल्लाह उन्हें इसकी तौफ़ीक़ दे।

दूसरा उल्लेख: श्रीमान मिर्ज़ा मुहम्मदुद्दीन नाज़ साहब (सदर, सदर अंजुमन अहमदिया रबवा, पाकिस्तान)

पिछले दिनों उनका निधन हुआ। "इन्ना लल्लिाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन"।

वे मिर्ज़ा अहमदुद्दीन साहब के बेटे थे। उनके परिवार में अहमदियत का आगमन उनके पिता के माध्यम से हुआ, जिन्होंने 1942 में अहमदियत स्वीकार की।

मिर्ज़ा मुहम्मदुद्दीन साहब का निकाह सय्यदा नुसरत जहां साहिबा से हुआ। उनका एक बेटा था, जो युवावस्था में ही गुजर गया। इसके बाद उन्होंने अपने एक भांजे और भांजी को गोद लिया और बच्चों की तरह पाला।

शैक्षिक और सेवाएं : 1965 में उन्होंने जामिया अहमदिया में दाखिला लिया।

1971 में जामिया पास करने के बाद, उन्हें फील्ड में पहली नियुक्ति मिली। वे 37 वर्षों तक जामिया में शिक्षक रहे।

अरबी, सर्फ़-नहव, अदब, फिक़्ह, और तसव्वुफ़ पढ़ाते थे।

जामिया में नायब प्रिंसिपल के तौर पर भी सेवा दी।

2018 में, उन्हें सदर, सदर अंजुमन अहमदिया नियुक्त किया गया।

अन्य सेवाएं: ख़ुद्दामुल् अहमदिया और अंसारुल्लाह में केंद्रीय स्तर पर सेवाएं दीं।

माहनामा खालिद और माहनामा अंसारुल्लाह के संपादक रहे।

1994 में, उन्हें असीर-ए-राह-ए-मौला होने का सम्मान प्राप्त हुआ। दारुल-क़ज़ा और मजलिस इफ्ता के सदस्य।

अरबी बोर्ड के अध्यक्ष और तदवीन-ए-फिक़्ह कमेटी के सदस्य। जीवन का सिद्धांत: उनकी पत्नी कहती हैं:

"उनकी पूरी ज़िंदगी का निचोड़ यह था:

'सभी से मोहब्बत, किसी से नफरत नहीं।'" उनके एक भांजे ने बताया :

"मुझे याद है कि मिर्ज़ा नाज़ साहिब ने मुझसे कहा था कि उन्होंने 10 या 12 साल की उम्र से तहज्जुद पढ़नी शुरू की थी, और आज तक, बीमारी को छोड़कर, कभी भी इस आदत को नहीं छोड़ा। इसी तरह, 10 या 11 साल की उम्र में उन्होंने नियमित रूप से मस्जिद में जाकर नमाज़ पढ़नी शुरू की थी। जब तक डॉक्टरों ने मना न किया हो या बीमारी न हो, वे हमेशा मस्जिद में जाकर जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ते थे।"

उनके एक करीबी ने बताया: "एक बार मैंने उनके साथ सर्दियों की लंबी रातें बिताईं। मैंने देखा कि वे रात में उठे और लगभग चार घंटे लगातार तहज्जुद पढ़ते रहे। वे कहा करते थे कि सर्दियों की लंबी रातों में लंबी तहज्जुद पढ़नी चाहिए।"

उन्होंने बताया:

"दो नफ्ल मैंने खलीफ़ातुल् मसीह सानी रहमहुल्लाह के दौर से पढ़ने शुरू किए और आज तक उसी पर कायम हूं।"

खास बातें: वे जलसों में आते थे और गहरे इख़लास और वफ़ादारी का इज़हार करते थे।

वे कहा करते थे: "मैंने नमाज़ें खलीफ़ा-ए-वक़्त के पीछे जमाअत के साथ पढ़नी हैं। अगर तुम मुझे समय पर पहुंचा सकते हो, तो मैं तुम्हारे साथ चलूंगा। वरना नहीं।"

उनके भाई मुश्ताक़ बेग साहिब ने बताया:

"मेरे भाई ने हमारे पिता की इच्छा पर अपनी ज़िंदगी जमाअत के लिए वक़्फ़ कर दी और आख़िरी सांस तक इसे बखूबी निभाया। उन्होंने बीए की पढ़ाई पूरी की क्योंकि वे उच्च शिक्षा प्राप्त कर अपनी ज़िंदगी वक़्फ़ करना चाहते थे।

जब वे जामिया से फ़ारिग हुए, तो मिस्र की एक यूनिवर्सिटी ने उन्हें एक उच्च पद और अच्छी तनख्वाह की पेशकश की। लेकिन उन्होंने यह कहते हुए उसे ठुकरा दिया:

'मैंने अपनी ज़िंदगी अल्लाह की राह में वक़्फ़ कर दी है।'

यह उस समय की बात है जब मुरब्बियों का मासिक भत्ता केवल 40 रुपये था, और मुश्किल से गुज़ारा होता था।

ज़िम्मेदारी का एक वाक़िया मबशर अयाज़ साहिब (प्रिंसिपल, जामिया अहमदिया रबवा) लिखते हैं:

"मैं याद करता हूं, हम दूसरी या तीसरी कक्षा में थे। नाज़ साहिब हमें अरबी पढ़ाते थे। उन्हीं दिनों उनकी एक बहन शायद ब्लड कैंसर से पीड़ित थीं, और डॉक्टरों ने जवाब दे दिया था। उनकी बहन जामिया में ही उनके पास रह रही थीं। एक दिन उनकी बहन को खून की बोतल लगाई गई।

इसके बाद भी नाज़ साहिब हमारी क्लास लेने आ गए। जब वे पढ़ा रहे थे, उनका एक करीबी क्लास के बाहर आया और उन्हें बुलाया। उन्होंने उसकी बात सुनी लेकिन क्लास में वापस आकर पढ़ाने लगे।

उस दिन वे हमें एक अरबी कविता पढ़ा रहे थे, जिसमें दुखद शेर भी थे। जब वे पढ़ा रहे थे, उनकी आवाज़ भर आई और आंखों से आंसू बहने लगे। हम हैरान थे कि नाज़ साहिब जैसे हिम्मती इंसान की यह हालत क्यों हुई।

क्लास खत्म करने के बाद वे तेज़ी से बाहर निकले और घर चले गए। बाद में हमें पता चला कि जो व्यक्ति उन्हें बुलाने आया था, वह उनकी बहन की गंभीर हालत की खबर देने आया था। लेकिन नाज़ साहिब ने अपने फर्ज़ को प्राथमिकता दी। क्लास खत्म करने के कुछ समय बाद ही उनकी बहन का इंतकाल हो गया।"

उनकी खूबियां और वफादारी: उन्होंने वक़्फ़ का पूरा हक अदा किया।

उनका खलीफ़ा-ए-वक़्त से गहरा इख़लास और वफ़ादारी का रिश्ता था।

अल्लाह तआला उन्हें माफ़ करे, उन पर रहमत नाज़िल करे और उनके दर्जात बुलंद करे।

तीसरा उल्लेख: श्रीमान अकमुरात ख़ाकिएव साहिब (राष्ट्रीय अध्यक्ष, जमाअत अहमदिया, तुर्कमेनिस्तान) पिछले दिनों उनका निधन हुआ।

"इन्ना लल्लिाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन"।

डॉ. अब्दुल अलीम साहिब के माध्यम से उनका परिचय हुआ। रावेल बुखारियोव साहिब और अब्दुल अलीम साहिब की संयुक्त तबलीग के कारण उन्होंने अहमदियत को दिल से स्वीकार कर लिया था, लेकिन बेअत नहीं की थी। 2010 में पहली बार जलसे में शामिल हुए।

यहां उन्होंने मुझे (खलीफ़ा-ए-वक़्त) से मुलाकात की और उसके बाद विश्वव्यापी बेअत में हिस्सा लिया। वे इस बात पर बेहद खुश थे कि वे खलीफ़ा-ए-वक़्त के हाथों पर बेअत कर रहे हैं।

बेअत के दौरान: लिखने वाले ने लिखा:

"जब बेअत के शब्द दोहराए जा रहे थे, तो उनके चेहरे के भाव इख़लास, वफ़ादारी और ईमान की ताकत की वजह से बदलते जा रहे थे। यह देखकर मुझे यक़ीन नहीं हो रहा था कि ये वही अकमुरात साहिब हैं, जो कुछ देर पहले हमसे हंसते हुए बातें कर रहे थे।"

क़ुरआन का अनुवाद और सेवाएं: कुछ साल पहले उन्होंने तुर्कमानी भाषा में क़ुरआन का अनुवाद करना शुरू किया, जिसे उन्होंने पिछले साल पूरा किया। 2024 के जलसा सालाना यूके के बाद उन्होंने मुझसे अधिक समय तक रुकने की अनुमति मांगी। इन दिनों उन्होंने नमाज़ों की पाबंदी का खास ध्यान रखा और क़ुरआन के अनुवाद को मरकज़ी रशियन डेस्क की मदद से पुस्तक के रूप में तैयार किया। पहले तुर्कमानी अहमदी: अकमुरात साहिब न केवल तुर्कमेनिस्तान के पहले अहमदी थे, बल्कि अपनी वफ़ात तक जमाअत अहमदिया तुर्कमेनिस्तान के राष्ट्रीय अध्यक्ष के तौर पर भी सेवा करने वाले व्यक्ति थे।

उनका सफर: अपने इंटरव्यू में उन्होंने कहा:

"मैं जन्मजात मुसलमान हूं, लेकिन एक पारंपरिक मुसलमान था। यह सोवियत संघ का दौर था और मैं कम्युनिज्म का समर्थक था। लेकिन उस समय भी हमारे भीतर कुछ इस्लामी मूल्य सुरक्षित थे।

मैंने गणित में शिक्षा प्राप्त की, लेकिन बुनियादी रूप से हमेशा अल्लाह को खोजता रहा। कौन सा अल्लाह? यह अलग सवाल है। लेकिन मैं हमेशा अल्लाह को खोजता रहा।

मैं क़ुरआन की कुछ आयतें अरबी में जानता था।"

2001 में एक सपना: "अपने पिता की वफ़ात के बाद, मैंने एक सपना देखा। एक बुज़ुर्ग व्यक्ति, जो बेहद सफेद कपड़े पहने हुए थे, मेरे पास आए। उनका सफेद पहनावा इतना चमकदार था कि मैं बयान नहीं कर सकता।

उन्होंने अपने हाथ से इशारा किया और मुझे अपनी ओर बुलाया। उन्होंने कुछ नहीं कहा, बस मुझे अपनी तरफ आने का इशारा दिया।

यह 2001 की बात है। उसके बाद रावेल साहिब और डॉ. अलीम साहिब की तबलीग से मुझे हज़रत मसीह माहूद अलैहिस्सलाम की बअसत (आगमन) का पता चला।

जब मुझे हज़रत मसीह माहूद अलैहिस्सलाम की तस्वीर दिखाई गई, तो मैंने तुरंत कहा 'इन्हीं बुज़ुर्गों ने मुझे अपनी ओर बुलाया था।'

इस तरह मैंने अहमदियत को स्वीकार किया और 2010 में बाक़ायदा बेअत कर ली।"

उनकी भावनाए "जो भावनाएं मेरे दिल में हैं, मेरी ज़बान उन्हें बयान करने से क़ासिर है। अहमदियत ने जो रौशनी मुझे दी है, मेरा दिल उसे हर शब्द से अधिक महसूस करता है, जिसे मैं बयान कर सकता हूं।"

गहरी वफ़ादारी: वे कहते थे: "हर ख़ुत्बा और हर ख़िताब को मैं अपने दिल और रूह में उतारता हूं। इसे इतनी तवज्जो से सुनता हूं कि मुझे ज़बानी याद हो जाता है। मैं मानता हूं कि दुनिया की सलामती और समान अधिकारों की स्थापना जमाअत अहमदिया से जुड़ी हुई है।"

प्राथमिकता 2024 के जलसा यूके में रुकने के दौरान उन्होंने बताया: "तुर्कमेनिस्तान में घर पर एक शादी है, जिसमें सभी रिश्तेदार मौजूद हैं। एक घर के मुखिया के तौर पर मुझे वहां होना चाहिए। लेकिन मैं समझता हूं कि क़ुरआन के तुर्कमानी अनुवाद का यह काम मेरे लिए सबसे ज़रूरी है। इससे ज़्यादा अहम और कुछ नहीं हो सकता।"

दुआ "अल्लाह तआला उन पर मग़फ़िरत और रहमत फरमाए, उनके दर्जात बुलंद करे और उनके बच्चों को भी अहमदियत स्वीकार करने और उस पर अमल करने की तौफ़ीक दे।"

नमाज़ों के बाद उनका ग़ायबाना जनाज़ा पढ़ाया जाएगा।

(स्रोत: अल्-फ़ज़ल इंटरनेशनल, 10 जनवरी 2025, पृष्ठ 2-7)

★ ★ ★

पृष्ठ 01 का शेष

129वां जलसा सालाना क़ादियान 29 ,28 ,27 दिसंबर 2024 को आयोजित हो कर बखैर ओ ख़ूबी संपन्न हुआ।
तीनों दिनों के जलसा कार्यक्रमों की लाइव स्ट्रीमिंग, जिससे देश और विदेश में जलसे से लाभ प्राप्त किया गया।
लाइव स्ट्रीमिंग के माध्यम से 63,666 लोगों ने जलसे की कार्यवाही देखी और सुनी।
16,000 से अधिक आशिक़ाने अहमदियत की जलसे में शिरकत।
42 देशों से विभिन्न क़ौमों के अज़ीज़ और ख़वातीन की नुमाइंदगी।
MTA इंटरनेशनल के ज़रिए सय्यदना हज़रत खलीफ़तुल मसीह ख़ामिस (अय्यदहुल्लाहु तआला) का रोशन बसीरत से भरा समापन भाषण।
समापन भाषण में इस्लामाबाद (यूके) में जमाअत के अज़ीज़ों का इज्तिमा।
कुछ अफ्रीकी देशों के जलसे और समापन भाषण में उनकी शिरकत।
नमाज़-ए-तहज्जुद।
दर्स-उल-क़ुरआन और ज़िक्र-ए-इलाही से मुनव्वर माहौल।
उलमा-ए-किराम के गहरी मालूमात से भरपूर तक़ारीर।
9 भाषाओं में कार्यक्रमों का अनुवाद।
जमाअत के लोगों की मालूमात बढ़ाने के लिए तरबियती उमूर पर आधारित डॉक्युमेंट्री और विभिन्न मालूमाती नुमाइशों का आयोजन।
निकाहों के ऐलान।
प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में जलसे की कवरेज।
पुरसुकून और ख़ुशगवार माहौल में जलसे की तमाम कार्यवाही का मुकम्मल होना।

अल्हम्दुलिल्लाह कि जलसा सालाना कादियान, दिनांक 27, 28, 29 दिसंबर 2024, शुक्रवार, शनिवार, रविवार को कादियान दारुलअमान की पवित्र बस्ती में आयोजित होकर सफलता और भलाई के साथ संपन्न हुआ। जलसे से पहले ही देश के कोने-कोने से अहमतियत के आशिक बड़े ही उत्साह और जोश के साथ जलसे में भाग लेने के लिए कादियान आने लगे। जैसे-जैसे जलसे के दिन करीब आते गए, कादियान दारुलअमान की रौनकें बढ़ती गईं, यहाँ तक कि कादियान पूरी तरह से मेहमानों से भर गया। जहाँ भी जाओ, जहाँ भी नज़र डालो, हजरत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मेहमान नज़र आते। विदेशों से भी बड़ी संख्या में अहमतियत के प्रेमी जलसे में शामिल हुए। कादियान दारुलअमान की प्यारी बस्ती एक बार फिर खुशियों और रौनकों से भर गई।

मेहमानों के आगमन से पहले ही बिजली और रोशनी की व्यवस्थाओं के तहत मुहल्ले की सभी गलियों और सड़कों को ट्यूब लाइटों से रोशन कर दिया गया। बहिश्ती मकबरा, दारुलमसीह, मस्जिद मुबारक, मस्जिद अक्सा, मीनार-ए-मसीह और दारुलज़ियाफत को छोटे-छोटे रंगीन बल्बों से दुल्हन की तरह सजाया गया। इस तरह, मसीह मौऊद व महदी माहूद (अलैहिस्सलाम) की रूहानी बस्ती अपनी आंतरिक जगमगाहट के साथ-साथ बाहरी रूप से भी रोशन हो उठी।

जलसे से पहले तक मौसम बहुत सुहावना था। जलसा गाह पूरी तरह तैयार था और अपने मेहमानों का बेसब्री से इंतजार कर रहा था। सुबह 10 बजे जलसे की उद्घाटन सभा शुरू होनी थी। लोग और महिलाएँ जलसा गाह की ओर बड़े उत्साह से समय से पहले ही बढ़ रहे थे कि अचानक बारिश शुरू हो गई, जिससे जलसे को बाग़-ए-अहमद के बजाय मस्जिद अक्सा में आयोजित करना पड़ा। बारिश के कारण जलसे के पहले दो दिन मस्जिद अक्सा में ही आयोजित किए गए। तीसरे दिन अल्लाह तआला के फज़ल और करम से मौसम अच्छा हो गया और जलसा बाग़-ए-अहमद यानी जलसा गाह में संपन्न हुआ।

जलसे के कर्मचारियों और व्यवस्थाओं का निरीक्षण

दिनांक 23 दिसंबर, सोमवार को सुबह 10:45 बजे बाग़-ए-अहमद में हज़ूर अनवर (अय्यदहुल्लाहु तआला) के प्रतिनिधि, श्रीमान मौलाना मुहम्मद इनाम ग़ौरी साहिब (नाज़िर आला व अमीर जमाअत कादियान) ने जलसा सालाना कादियान 2024 के "कर्मचारियों और व्यवस्थाओं के निरीक्षण" के कार्यक्रम में जलसा कर्मचारियों को संबोधित किया और उसके बाद जलसा सालाना की व्यवस्थाओं का निरीक्षण किया।

जैसे ही हज़ूर अनवर के प्रतिनिधि बाग़-ए-अहमद में तशरीफ लाए, उन्हें "अह्लन व सह्लन व मरहबा" के नारों से स्वागत किया गया। सबसे पहले, हज़ूर अनवर के प्रतिनिधि ने अपने-अपने बैनर के नीचे खड़े व्यवस्थापकों और नाज़िमों से मुसाफ़ा किया। कार्यक्रम की शुरुआत तिलावत-ए-क़ुरआन से हुई। अज़ीज़ लुक़मान तकी ने सूरह अल-बक़रह की अंतिम दो आयतों की तिलावत की और उनका अनुवाद पेश किया। इसके बाद श्रीमान नाज़िम आला साहिब ने भाषण दिया।

आपने कहा कि यद्यपि हमारा यह जलसा सालाना एक राष्ट्रीय जलसा है, लेकिन कादियान दारुलअमान के स्थायी केंद्र होने की वजह से और रसूलुल्लाह करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के पूर्ण प्रतिबिंब हजरत मसीह मौऊद व महदी माहूद (अलैहिस्सलाम) की जन्मभूमि, निवास और विश्राम स्थल होने के कारण इस जलसे की एक विशेष हैसियत और महत्वपूर्ण स्थान है। और इस दृष्टि से भी कि हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रहिल अज़ीज़ हमारे जलसे के लिए समापन भाषण फ़रमाते हैं, जो एम.टी.ए. के माध्यम से पूरी दुनिया में लाइव प्रसारित होता है। इसके अलावा, दुनिया के विभिन्न देशों से प्रतिनिधि मंडल क़ादियान आते हैं, जिससे यह जलसा केवल एक राष्ट्रीय जलसा न रहकर एक अंतरराष्ट्रीय जलसा बन जाता है।

इसके अतिरिक्त, क़ादियान वह पवित्र बस्ती है जहाँ अल्लाह की निशानियाँ मौजूद हैं। यही वह स्थान है जहाँ अल्लाह के नबी चले-फिरे, जीवन व्यतीत किया और इस्लाम के पुनर्जागरण की नींव रखी। यहीं से जमाअत दुनिया भर में फैली। इस दृष्टि से, क़ादियान दारुलअमान का जलसा विशेष महत्व का होता है।

इसलिए, इस जलसे में ड्यूटी देने वाले ख़ुद्दाम, अंसार और लजनात के लिए यह एक बड़ी सौभाग्य की बात है कि उन्हें इस जलसे में सेवा करने की तौफ़ीक़ मिल रही है। जहाँ ड्यूटी निभाने वालों के लिए यह सौभाग्य की बात है, वहीं उनकी ज़िम्मेदारी भी बहुत बढ़ जाती है कि वे अपनी ड्यूटी को बेहतरीन तरीक़े से निभाएँ।

हज़ूर अनवर के प्रतिनिधि ने फ़रमाया:

जलसा सालाना के तीन महत्वपूर्ण विभाग होते हैं: अफ़सर जलसा सालाना – इस विभाग के अंतर्गत जलसे के मेहमानों के ठहरने और खाने-पीने की ज़िम्मेदारी होती है।

अफ़सर जलसा गाह – इस विभाग के अंतर्गत मेहमानों के लिए आध्यात्मिक और बौद्धिक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं।

अफ़सर ख़िदमत – यह विभाग जलसे की सुरक्षा और अनुशासन बनाए रखने की ज़िम्मेदारी संभालता है।

इनमें से हर विभाग का अपना महत्व है। जलसे की सेवाएँ निभाने के लिए कर्मचारियों को बाक़ायदा ऑन-ड्यूटी किया जाता है, जिससे उनकी ज़िम्मेदारी और भी बढ़ जाती है कि वे पूरी निष्ठा और ईमानदारी से सेवा करें। अगर कार्यालय का कोई महत्वपूर्ण कार्य हो, तो ड्यूटी के साथ-साथ उसकी भी चिंता करनी चाहिए।

अल्लाह तआला की रज़ा और उसकी ख़ुशनूदी के लिए पूरी सच्चाई, नीयत की पवित्रता, इस्तिग़फ़ार और दुआओं के साथ अपने कर्तव्यों को अंजाम देना ज़रूरी है।

फिर भी अगर कोई कमी रह जाए, तो अल्लाह तआला अपने सतारी (ढाँकने वाले) गुण से उसे माफ़ कर देता है।

मेहमाननवाज़ी और सुरक्षा को लेकर मार्गदर्शन

इसके बाद, हज़ूर अनवर के प्रतिनिधि ने हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रहिल अज़ीज़ के कुछ निर्देश मेहमाननवाज़ी के संबंध में प्रस्तुत किए। हज़ूर अनवर के निर्देशों के आधार पर उन्होंने नाज़िम, अफ़सर और इंचार्ज साथियों को उनकी ज़िम्मेदारियों की ओर ध्यान दिलाया। साथ ही, सुरक्षा को लेकर सतर्क रहने की भी हिदायत दी।

विशेष रूप से नमाज़ की पाबंदी पर बल अंत में, उन्होंने विशेष रूप से नमाज़ को जमाअत (सामूहिक) के साथ अदा करने की ताकीद की। उन्होंने फ़रमाया कि ऐसा न हो कि एक ओर हम जलसा सालाना के मेहमानों की सेवा करके सवाब (पुण्य) कमाएँ और दूसरी ओर नमाज़ों में लापरवाही करके अपना सारा सवाब गँवा दें।

इसलिए, सच्ची निष्ठा और वफ़ादारी के साथ सेवा करते हुए अल्लाह तआला को राज़ी करने की कोशिश करनी चाहिए, ताकि इस दिव्य जलसे और इसमें शामिल होने वालों तथा सेवा करने वालों के लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जो दुआएँ की हैं, हम भी उन दुआओं में अपना हिस्सा प्राप्त कर सकें। आमीन।

दिनांक 27 दिसंबर 2024, शुक्रवार

उद्घाटन सत्र दिनांक 27 दिसंबर 2024 (जुम्मा मुबारक) को 129वें जलसा सालाना क़ादियान के उद्घाटन सत्र की कार्यवाही का आरंभ बस्तान-ए-अहमद के बजाय, बारिश और खराब मौसम के कारण मस्जिद अक्सा के पुराने हिस्से में सुबह 10 बजकर 57 मिनट पर हुआ।

मस्जिद अक्सा के पुराने और नए हिस्से में पुरुषों के लिए जलसे की कार्यवाही को देखने और सुनने की व्यवस्था की गई, जबकि महिलाओं के लिए मस्जिद अनवार में लाइव स्ट्रीमिंग के माध्यम से ऑडियो प्रसारण की सुविधा प्रदान की गई।

अचानक हुई बारिश के कारण, प्रशासन ने लगभग एक घंटे के भीतर मंच और लाइव स्ट्रीमिंग सहित सभी आवश्यक प्रबंध पूरे किए, और अध्यक्ष की अनुमति से जलसे की कार्यवाही का विधिवत शुभारंभ हुआ।

जलसे के प्रारंभ में, मकरम तारिक अहमद लोन साहब (जमाअत अहमदिया, काटपोरा, कश्मीर) ने सूरह अल-मोमिन की आयत नंबर 61 से 66 की तिलावत की, जिसका अनुवाद मकरम जावेद अहमद लोन साहब (नाज़िर दीवान, सदर अंजुमन अहमदिया, क़ादियान) ने प्रस्तुत किया।

इसके बाद, मोहतरम मौलाना मोहम्मद करीमुद्दीन शाहिद साहब, अध्यक्ष सत्र, ने उद्घाटन भाषण दिया।

उद्घाटन भाषण अपने उद्घाटन भाषण में, उन्होंने कहा कि जलसा सालाना क़ादियान की स्थापना सैयदना हज़रत मसीह मौऊद व महदी मौऊद अलैहिस्सलाम ने सन् 1891 में अल्लाह तआला के हुक्म से रखी थी।

उन्होंने अपने भाषण में सैयदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और हज़रत खलीफ़तुल मसीह अल-खामिस अय्यदहुल्लाहु तआला के निर्देशों के प्रकाश में जलसे के महत्व और इसकी बरकतों की ओर ध्यान दिलाया।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का फरमान

"इस जलसे को मामूली इंसानी जलसों की तरह न समझें। यह वह कार्य है जिसकी बुनियाद ख़ालिस अल्लाह की ताईद (सहायता) और इस्लाम के कलमे को ऊँचा करने पर रखी गई है। इस सिलसिले की बुनियादी ईंट ख़ुदा तआला ने अपने हाथ से रखी है और इसके लिए क़ौमें तैयार की हैं, जो जल्द ही इसमें शामिल होंगी, क्योंकि यह उस क़ादिर (सर्वशक्तिमान) का कार्य है, जिसके लिए कुछ भी असंभव नहीं।"

(मजमूआ इश्तेहारात, 1, इश्तेहार: 7 दिसंबर 1892)

इसके बाद, उन्होंने हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला का यह निर्देश प्रस्तुत किया :

"अगर अल्लाह तआला की रज़ा प्राप्त करने की कोशिश नहीं हो रही, अगर तक़वा (धर्मपरायणता) में वृद्धि की कोशिश नहीं हो रही, अगर अच्छे नैतिक आचरण नहीं दिखाए जा रहे, अगर बंदों के हक़ अदा नहीं किए जा रहे, तो फिर जलसे में आने का कोई मकसद ही पूरा नहीं होता और इसका कोई फायदा नहीं।"

(ख़ुत्बा जुमा, 23 अगस्त 2024)

शामिल होने वालों के लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की दुआ

इसके बाद, अध्यक्ष सत्र ने शामिल होने वाले मेहमानों के लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की दुआ प्रस्तुत की:

"हर वह व्यक्ति जो इस अल्लाह के लिए आयोजित जलसे में शामिल होने के लिए यात्रा करे, अल्लाह तआला उसके साथ हो, उसे बड़ा इनाम प्रदान करे, उस पर रहमतें बरसाए, उसकी मुश्किलें और बेचैनी के हालात आसान करे, उसके ग़मों को दूर फरमाए, हर तकलीफ़ से उसे छुटकारा दे, और उसकी इच्छाओं की राहें खोल दे।

और क़यामत के दिन उन बंदों के साथ उसे उठाए, जिन पर अल्लाह का फ़ज़ल और रहमत है।

और जब तक वह सफर में रहे, अल्लाह तआला उसका खलीफा (संरक्षक) हो। ऐ अल्लाह! ऐ ज़ुल-मज्द (महानता वाला), ऐ अतिया देने वाला, ऐ रहीम, ऐ मुश्किलें हल करने वाले!

इन तमाम दुआओं को क़ुबूल कर और हमें हमारे विरोधियों पर रौशन निशानों के साथ ग़लबा (विजय) प्रदान कर, क्योंकि हर शक्ति और ताक़त सिर्फ तुझ में है।आमीन, सुम्मा आमीन।"

आपने हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला का यह फरमान पेश किया आपने हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला का यह फरमान प्रस्तुत किया कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की दुआएं केवल उन्हीं के हक़ में पूरी होंगी, जो इस उद्देश्य को समझ रहे होंगे। वे वही लोग होंगे जो इस मकसद को समझ रहे होंगे, जिसके लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जलसा का आयोजन किया था।

(ख़ुत्बा जुमा, 23 अगस्त 2024)

पहला दिन - पहला सत्र

उद्घाटन भाषण एवं दुआ।

अध्यक्षीय उद्घाटन भाषण और दुआ के बाद, मोहतरम नसर-मन-अल्लाह साहब (नायब नाज़िर उमूर-ए-आमा) ने "मेरे मौला मेरी यह एक दुआ है" नामक नज़्म सैयदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के क़लाम से प्रस्तुत की।

इसके बाद, इस सत्र की पहली तक़रीर मोहतरम मौलाना मोहम्मद हमीद कौसर साहब (नाज़िर दावत-इलल्लाह, उत्तरी भारत) ने "अल्लाह तआला की हस्ती - उसकी सिफ़त समीउद्दुआ के प्रकाश में" विषय पर की।

पहली तक़रीर: "अल्लाह की हस्ती और उसकी सिफ़त समीउद्दुआ"

मोहतरम मौलाना मोहम्मद हमीद कौसर साहब ने क़ुरआन करीम की आयतों के संदर्भ में फ़रमाया कि अल्लाह तआला कहता है: "मुझे पुकारो, मैं तुम्हारी पुकार सुनूंगा।"

आज की नई पीढ़ी मज़हब और अल्लाह तआला से इसलिए दूर होती जा रही है क्योंकि उनके धार्मिक रहनुमा अल्लाह तआला की पहचान और उस तक पहुँचने का सही तरीका उन्हें नहीं बताते, जिससे वे निराश हो जाते हैं।

इसकी एक साधारण मिसाल से इसे समझा जा सकता है

अगर कोई व्यक्ति अपनी किसी ज़रूरत के लिए किसी घर के दरवाज़े को इस उम्मीद से खटखटाए कि घर का मालिक उसकी मदद करेगा, लेकिन बार-बार दरवाज़ा खटखटाने के बावजूद अगर कोई जवाब नहीं मिलता, तो वह यह निष्कर्ष निकालने में हक़दार होगा कि शायद घर में कोई नहीं है। और अगर कोई होता तो ज़रूर जवाब देता।

इसी तरह, जब लोग अल्लाह को पुकारते हैं और अगर उन्हें तत्काल उत्तर नहीं मिलता, तो वे यह समझ लेते हैं कि अल्लाह का अस्तित्व ही नहीं है।

इसके विपरीत, सैयदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

"जो ढूंढता है, वह पाता है, जो मांगता है, उसे दिया जाता है और जो खटखटाता है, उसके लिए दरवाजा खोला जाता है।

(ब्रहीन-ए-अहमदिया, रूहानी ख़ज़ाइन, 1, पृष्ठ 429)

मोहतरम मौलाना साहब ने अल्लाह तआला की सिफ़त समीउद्दुआ के प्रकाश में आँहज़रत (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की क़ुबूलियत-ए-दुआ के वाक़ियात बयान किए।

इसमें हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के इस्लाम क़बूल करने का एक रूह परवर वाक़िया भी शामिल था।

इसके अलावा, उन्होंने हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला की दुआ के नतीजे में एक ताक़तवर सुनामी के रुकने का वाक़िया भी बयान किया, जब हज़ूर अनवर फिजी में थे और एक ज़बरदस्त सुनामी फिजी से टकराने वाली थी।

मौलाना साहब ने क़ुबूलियत-ए-दुआ के कई और रूहानियत अफ़रोज़ वाक़ियात बयान किए, जो इस बात का ज़िंदा सबूत हैं कि अल्लाह तआला हय्य (जीवित) और समीउद्दुआ (दुआ सुनने वाला) है।

दूसरी तक़रीर: "इस्लामी आदाब और अख़लाक़"

इस सत्र की दूसरी तक़रीर मोहतरम मौलाना अता-उल-मुजीब लोन साहब (प्रिंसिपल, जामिया अहमदिया क़ादियान एवं सदर, अंसारुल्लाह भारत) ने की।

आपकी तक़रीर का विषय था:

"इस्लामी आदाब और अख़लाक़ – खाने-पीने, सफ़ाई, रास्तों के हक़, ग़ज़-ए-बसर (निगाहों को नीचा रखना), मजलिसों के आदाब, और मस्जिदों के आदाब।"

मौलाना साहब ने फ़रमाया:

"रूहानियत की तमाम बुनियाद अदब (सम्मान और शिष्टाचार) पर है।

अगर हम इस्लाम द्वारा सिखाए गए आदाब को अपनाएँ, तो यही कुंजी हमें बेहतरीन अख़लाक़ (चरित्र) और रूहानियत के उच्च स्तर तक ले जा सकती है।"

उन्होंने आगे फ़रमाया कि अगर कोई व्यक्ति इस्लाम के सिखाए हुए अदब और अख़लाक़ को अपनाता है, तो वह धीरे-धीरे रूहानियत के ऊँचे दर्जों की तरफ़ बढ़ता चला जाता है।

रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के ज़माने में इंसान की हालत

जिस दौर में रसूलुल्लाह करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम दुनिया में मबऊस (नियुक्त) हुए, उस समय इंसान की हालत कैसी थी? इसका वर्णन अल्लाह तआला ने इस आयत में किया:

"ظَهَرَ الْفَسَادُ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ"

(धरती और समुद्र में फसाद फैल गया)

यानी इंसानी अदब (शिष्टाचार), अख़लाक़ (चरित्र) और रूहानियत (आध्यात्मिकता)हर लिहाज़ से इंसान बदतर से बदतर हालत में था। हर तरफ फसाद ही फसाद था और इंसान की हालत एक मुर्दा (निर्जीव) व्यक्ति की तरह हो गई थी।

ऐसे में रसूलुल्लाह-ए-अकरम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की मबऊसियत (आगमन) का मक़सद बताते हुए अल्लाह तआला ने फ़रमाया:

"اِعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ يُحْيِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا"

(जान लो कि अब अल्लाह तआला इस मुर्दा ज़मीन को फिर से ज़िंदा करेगा) रसूलुल्लाह करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने इंसानों को इस गिरावट से उठाकर उस ऊंचे मुक़ाम तक पहुंचाया, जहां उन्होंने न सिर्फ़ इंसानी अदब सीखा, बल्कि अख़लाक़ के सबसे ऊंचे मयार (मानक) हासिल किए और फिर रूहानियत के उच्चतम स्तर पर पहुंचे।

यहाँ तक कि अल्लाह तआला ने उन्हें यह अज़ीम सर्टिफिकेट अता किया:

"رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ"

(अल्लाह उनसे राज़ी हो गया और वे अल्लाह से राज़ी हो गए)

इस्लामी अदब और अख़लाक़ की अहमियत

मोहतरम (वक्ता) ने क़ुरआन करीम की आयात और अहादीस-ए-नबवी की रोशनी में निम्नलिखित पहलुओं पर विस्तार से रौशनी डाली:

खाने-पीने के आदाब सफाई के आदाब रास्तों के हक़ और उनके आदाब

जैसे ग़ज़-ए-बसर (निगाहें नीची रखना) और सलाम का जवाब देना

मस्जिदों के आदाब

मजलिसों (बैठकों) के आदाब अंत में उन्होंने फ़रमाया:

"हमें यह समझना होगा कि इन आदाबों में ही एक मोमिन की असल पहचान और खूबसूरती है। यह नामुमकिन है कि कोई मोमिन हो, लेकिन इन आदाबों से ख़ाली हो।"

"अख़लाक़-ए-हसना (अच्छे चरित्र) से आरोस्त (सुसज्जित) होने के बाद ही इंसान ईमान और तक़वा के ऊँचे दर्जे तक पहुँच सकता है।"

नसीहत और दुआ "इसलिए हमें ग़ैर क़ौमों (अन्य समुदायों) की नकल में इन इस्लामी आदाबों को नज़रअंदाज़ नहीं करना चाहिए। अगर ऐसा हुआ, तो हम न सिर्फ़ अच्छे अख़लाक़ से, बल्कि ईमान से भी महरूम हो जाएंगे।"

"हमें चाहिए कि इन आदाबों को खुद अपनाएं और अपनी आने वाली नस्लों को भी इनसे वाक़िफ कराएं, ताकि हमारी आने वाली पीढ़ियाँ भी इस्लामी अदाब और अख़लाक़ से सजी-संवरी रहें।"

अल्लाह तआला हमें इसकी तौफ़ीक़ दे। आमीन।

पहला दिन - दूसरा सत्र जलसा सालाना क़ादियान 2024 के पहले दिन का दूसरा सत्र ठीक 2:30 बजे शुरू हुआ।

इस सत्र की सदारत मोहतरम मौलाना मोहम्मद हमीद कौसर साहब (नाज़िर दावत-इलल्लाह मरकज़िया, उत्तरी भारत और इंचार्ज, शुबा-ए-तारीख़-ए-अहमदियत, भारत) ने की।

तिलावत इस सत्र की शुरुआत अज़ीज़-ए-मोहतरम मुहम्मद इब्राहीम (तालिबे-इल्म, जामिया अहमदिया क़ादियान) की तिलावत से हुई। उन्होंने सूरह आले-इमरान (आयात 160-164) की तिलावत की, जिसका तर्जुमा मोहतरम मौलवी नूरुद्दीन नासिर साहब (सदर-ए-उमूमी, क़ादियान) ने पेश किया।

तरान इसके बाद मोहतरम सईद अहमद मल्काना साहब (मुरब्बी सिलसिला, कारकुन निज़ामत जाइदाद) और अज़ीज़ दबीर अहमद शमीम साहब (क़ादियान) ने मिलकर तराना पेश किया।

इन्होंने हज़रत खलीफ़तुल मसीह अल-ख़ाबे (रहमहुल्लाह) के पाकीज़ा मंज़ूम कलाम: "ऐ शाह-ए-मक्की व मदनी सैय्यद-उल-वरा"

के चंद अशआर निहायत खूबसूरत अंदाज़ में पढ़े

पहला सत्र: पहली विद्वतापूर्ण तक़रीर इस सत्र की पहली आलिमाना (विद्वतापूर्ण) तक़रीर मोहतरम मौलाना मुहम्मद इनाम ग़ोरी साहब (नाज़िर-ए-आला, सदर अंजुमन अहमदिया क़ादियान) ने की। उनका विषय था:

"सीरत-ए-आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम (ग़ज़वात में आपके हुस्न-ए-अख़लाक़)" (युद्धों में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का श्रेष्ठ आचरण)

फाज़िल मुकर्रिर (सम्मानित वक्ता) ने फ़रमाया कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाहुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हर हाल में जंग से बचने और अमन (शांति) के रास्ते अपनाने की कोशिश फ़रमाते थे। लेकिन जब युद्ध अवश्यंभावी हो जाता, तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के महान चरित्र का अद्भुत प्रदर्शन होता।

उन्होंने ग़ज़वा-ए-बद्र, ग़ज़वा-ए-उहुद और ग़ज़वा-ए-ख़ंदक के वाक़ियात बयान करते हुए उनमें प्रकट हुए आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के श्रेष्ठ नैतिक गुणों पर विस्तार से चर्चा की। इससे यह स्पष्ट होता है कि रसूलुल्लाहुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपनी जमाअत को जंग के आदाब और नियमों के बारे में ठोस और स्थायी हिदायतें दी थीं। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने स्वयं भी कठिन हालात में अपने उत्कृष्ट आदर्शों को प्रस्तुत किया।

फ़त्ह-ए-मक्का और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का महान नैतिक प्रदर्शन अंत में, फाज़िल मुकर्रिर ने फ़त्ह-ए-मक्का (मक्का विजय) का दिल को छू लेने वाला वर्णन किया और इस अवसर पर रसूलुल्लाह-ए-अकरम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बेमिसाल अख़लाक़ को विस्तार से पेश किया।

उन्होंने यह भी फ़रमाया कि अगर युद्धों में रसूलुल्लाहुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के हुस्न-ए-अख़लाक़ (श्रेष्ठ नैतिकता) का ज़िक्र किया जाए, तो इसे आपकी इबादतों के उल्लेख के बिना अधूरा माना जाएगा।

युद्धों के दौरान भी जब वातावरण ख़ौफ़ और ख़तरे से भरा हुआ होता, तब भी आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने कभी नमाज़-ए-बा-जमाअत नहीं छोड़ी।

हज़रत खलीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस (अय्यदहुल्लाह) का इरशाद

तक़रीर के अंत में, मोहतरम मौलाना मुहम्मद इनाम ग़ोरी साहब ने हज़रत खलीफ़तुल मसीह अल्-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का यह इक्तिबास (उद्धरण) पेश किया:

"आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की किसी से व्यक्तिगत दुश्मनी नहीं थी। यानी, आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के दिल में (मशरिक़ीन) के लिए कोई व्यक्तिगत द्वेष नहीं था। बल्कि यह युद्ध केवल उन लोगों के खिलाफ़ था जो अल्लाह के दीन को मिटाना चाहते थे। फिर आपने युद्ध के नियम और क़वायद तय किए, संधियों का सम्मान किया, और उन पर उच्चतम स्तर तक अमल किया। आज की दुनिया की तरह नहीं, जहाँ नियम तो अनेक बनाए जाते हैं, लेकिन उन पर अमल नहीं किया जाता, बल्कि दोहरे मापदंड अपनाए जाते हैं।" (ख़ुत्बा-ए-जुमा, 1 दिसंबर 2023)

दूसरी तक़रीर: सीरत-ए-सहाबा इसके बाद मोहतरम मौलवी तनवीर अहमद नासिर साहब (नाएब नाज़िर, नशर-ओ-अशाअत)

ने "सीरत-ए-सहाबा: हज़रत हमज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत मिर्ज़ा शरीफ़ अहमद रज़ियल्लाहु अन्हु" के विषय पर तक़रीर की।

पहला हिस्सा: हज़रत हमज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु तक़रीर के पहले हिस्से में, फाज़िल मुकर्रिर ने हज़रत हमज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु की संक्षिप्त जीवनी और उनके महान गुणों का ज़िक्र किया।

उन्होंने विशेष रूप से निम्नलिखित घटनाओं को विस्तार से बयान किया:

हज़रत हमज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु का इस्लाम स्वीकार करना

उनकी हिजरत (प्रवास) का वाक़िया मदीना में उनकी आर्थिक कठिनाइयों का उल्लेख

ग़ज़वात (युद्धों) में उनकी वीरता और भूमिका

ग़ज़वा-ए-बद्र, ग़ज़वा-ए-बनू क़ैनुक़ा, ग़ज़वा-ए-उहुद

इसके बाद उन्होंने हज़रत हमज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु के उल्लेखनीय गुणों और विशेषताओं पर प्रकाश डाला।

हज़रत हमज़ा को "सैय्यदुश-शुहदा" (शहीदों के नेता) और "असदुल्लाह" (अल्लाह का शेर) तथा "असदुर-रसूलुल्लाह" (रसूलुल्लाह का शेर) जैसी उपाधियों से सम्मानित किया गया था।

इस प्रकार, इस सत्र में रसूलुल्लाहुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के महान नैतिक आचरण और उनके महान साथियों की जीवनी पर गहन और प्रेरणादायक व्याख्यान दिए गए।

तक़रीर का दूसरा हिस्सा: हज़रत मिर्ज़ा शरीफ़ अहमद रज़ियल्लाहु अन्हु तक़रीर के दूसरे हिस्से में, फाज़िल मुकर्रिर ने हज़रत मिर्ज़ा शरीफ़ अहमद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु की संक्षिप्त जीवनी प्रस्तुत करते हुए उनके श्रेष्ठ गुणों का उल्लेख किया।

उन्होंने बताया कि आप भी मुबश्शिर औलाद (सुप्रसिद्ध शुभसूचित संतान) में से थे और अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को आपके बारे में कई शुभ समाचार (बशारात) प्रदान किए थे।

अल्लाह की विशेष सुरक्षा आपकी ज़िंदगी में कई ख़तरनाक हालात और कठिनाइयाँ आईं, लेकिन अल्लाह तआला ने अपनी दी हुई बशारातों के अनुसार आपकी हिफ़ाज़त फरमाई।

फाज़िल मुकर्रिर ने आपके गुणों और विशेषताओं के बारे में हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम.ए. रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत साहिबज़ादी नवाब मुबारका बेगम साहिबा रज़ियल्लाहु अन्हा, और हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा मंसूर अहमद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु के बयानात प्रस्तुत किए।

हज़रत मिर्ज़ा शरीफ़ अहमद रज़ियल्लाहु अन्हु के गुण और विशेषताएँ फाज़िल मुकर्रिर ने फ़रमाया कि:

आप एक उत्कृष्ट नैतिक गुणों का आदर्श नमूना थे।

आपका हुलिया और आवाज़ हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के हुलिया और आवाज़ से बहुत मिलती थी।

आपका बातचीत करने का अंदाज़ बहुत ही सादा और दिलकश था।

आपको क़ुरआन-ए-शरीफ और अहादीस-ए-नबवी से बेहद मोहब्बत थी।

फज्र की नमाज़ के बाद नियमित रूप से ऊँची आवाज़ में क़ुरआन की तिलावत किया करते थे।

आप "सूरह-ए-फातिहा", "दुरूद शरीफ", "या हय्यु या क़य्यूम बिरहमतिका नस्तग़ीस" और "सुब्हान अल्लाहि वा बिहम्दिही, सुब्हान अल्लाहिल अज़ीम" का बहुत ज़िक्र किया करते थे।

यात्राओं के दौरान हमेशा नमाज़ को पहले समय में ही अदा फ़रमाते थे। आप को कश्फ़ (आध्यात्मिक दर्शन) की अवस्था प्राप्त थी और आपकी दुआएँ क़ुबूल होती थीं।

हज़रत मसीह मौऊद के महान उत्तराधिकारी तक़रीर के अंत में, फाज़िल मुकर्रिर ने हज़रत मसीह मौऊद अलेहिस्सलाम के सुपुत्र, हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु (मुसलिह मौऊद) का यह इक्तिबास (उद्धरण) पेश किया:

"ये लोग, जिन्हें ख़ुदा के नबियों की सोहबत नसीब होती है, वे नबियों के सबसे क़रीब होते हैं। ख़ुदा के नबियों और उनके स्थापित किए हुए ख़ुलफ़ा के बाद, ये दूसरे दर्जे पर दुनिया में अमन और सुकून का कारण बनते हैं।"

दूसरे सत्र का समापनइसके बाद, सद्र-ए-इजलास (सत्र अध्यक्ष) की अनुमति से, पहले दिन का दूसरा सत्र सफलता के साथ समाप्त हो गया। ख़ुत्बा-ए-जुमा की लाइव प्रसारण आज, जुम्मा के दिन, हिंदुस्तानी समयानुसार ठीक 6:30 बजे, सभी मस्जिदों में सामूहिक रूप से और घरों में ख़्वातीन (महिलाओं) ने भी हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का ख़ुत्बा-ए-जुमा (शुक्रवार का उपदेश) लाइव सुना।

★ ★ ★

पृष्ठ 12 का शेष

मुलाकात की। वह स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ़ न्यूयॉर्क में इतिहास की प्रोफेसर हैं और उनका ताल्लुक भारत से है। इतिहास के क्षेत्र में उनकी विशेषता अफ्रीका में विभिन्न धर्मों, अल्पसंख्यक समुदायों और अंतर्राष्ट्रीय मानवीय सेवाओं से है।

प्रोफेसर ने बताया कि कुछ साल पहले वह घाना भी गई थीं और वहाँ कुछ समय के लिए रुकी थीं। हज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया कि मैंने घाना में एक लंबा समय बिताया है। इस पर उन्होंने कहा कि भले ही हज़ूर ने बहुत पहले घाना छोड़ दिया हो, लेकिन हज़ूर का काम अब भी वहाँ जीवित है।

प्रोफेसर ने बताया कि वह पश्चिमी अफ्रीका के अहमदियों पर एक पुस्तक लिखना चाहती हैं। इस पर हज़ूर-ए-अनवर ने कहा कि यदि आप पुस्तक लिखना चाहती हैं तो आपको वहाँ जाना होगा और वहाँ के अहमदियों के साक्षात्कार लेने होंगे। आपको खुद जानकारी हासिल करनी होगी। हज़ूर ने कहा कि हम आपकी मदद करेंगे, विशेष रूप से स्थानीय भाषाओं के अनुवाद में।

## परिवारों की मुलाकातें

इसके बाद कार्यक्रम के अनुसार परिवारों की मुलाकातें शुरू हुईं। आज सुबह के इस सत्र में 37 परिवारों के 162 सदस्यों को अपने प्रिय आका से मुलाकात की सआदत प्राप्त हुई। हज़ूर अनवर ने कृपापूर्वक शिक्षा प्राप्त कर रहे छात्रों और छात्राओं को पेन भेंट किए और छोटे बच्चों को चॉकलेट दी।

आज मुलाकात करने वाले ये लोग और परिवार मैरीलैंड की स्थानीय जमाअत के अलावा अन्य 18 जमाअतों और क्षेत्रों से आए थे। अलबनी से आने वाले परिवार 353 मील, शार्लेट से 422 मील, बोस्टन से 427 मील, जॉर्जिया से 661 मील, और ऑरलैंडो से आने वाले 874 मील की लंबी यात्रा तय करके आए थे।

आज भी मुलाकात करने वालों में कई ऐसे लोग और परिवार थे जिनकी जिंदगी में यह पहली बार हज़ूर अनवर से मुलाकात थी।

जमाअत सिरैक्यूज़ से आने वाले एक मित्र, ताहिर अहमद साहिब ने कहा, "मेरी तो पूरी दुनिया ही बदल गई। इससे बेहतर दिन मेरी जिंदगी में नहीं हो सकता। यह मेरी पहली मुलाकात थी।" वह रो रहे थे और कह रहे थे, "जब हज़ूर दूर से आते थे, तो हम देख लेते थे, लेकिन आज मैं बेहद करीब था। मैं अपनी भावनाओं को शब्दों में बयां नहीं कर सकता।"

लॉन्ग आइलैंड जमाअत से आए एक मित्र, फातिह बाजवा साहिब ने कहा, "शुरुआत में मैं बहुत घबराया हुआ था, लेकिन जैसे ही मैं अंदर गया और हज़ूर अनवर पर नजर पड़ी, मैंने अपने दिल में अत्यधिक सुकून महसूस किया। हमें कल ही मुलाकात का पता चला। मैं यहां मस्जिद में ड्यूटी पर था। मेरी पत्नी न्यूयॉर्क में करीब 400 मील दूर थी। वह तुरंत ट्रेन से यहां पहुंची, और हमें मुलाकात का सम्मान प्राप्त हुआ।"

जमाअत अटलांटा से आए एक मित्र, फ़ज़ल इलाही साहिब मुलाकात के बाद बाहर आए तो फूट-फूट कर रोने लगे और बोल ही नहीं सके। बड़ी मुश्किल से उन्होंने कहा, "मैं अपनी भावनाओं पर काबू नहीं पा रहा हूं। मुझे विश्वास नहीं हो रहा कि मेरी मुलाकात हो गई है। जब मैं 10 साल का था, तो मैंने दुआ की थी कि मेरी भी खलीफा-ए-वक्त से मुलाकात हो। आज 34 साल बाद मेरी यह दुआ पूरी हुई। हज़ूर के चेहरे पर सिर्फ नूर ही नूर था। मैं देख नहीं पा रहा था। हज़ूर अनवर ने हमें बहुत सी दुआएं दीं। मेरे बेटे को जन्म के समय कुछ समस्या हुई थी, उसका ऑपरेशन हुआ। वह वक्फ-ए-नौ है। हज़ूर अनवर ने उस बच्चे को बहुत सी दुआएं दीं।"

जमाअत क्लीवलैंड से आए मोहम्मद वासिफ साहिब ने कहा, "हम पाकिस्तान में थे और हज़ूर अनवर को टीवी पर देखा करते थे। हम दुआ करते थे कि हमें भी हज़ूर से मिलने का मौका मिले। आज अल्लाह ने हमारी दुआ कुबूल की और हमें मुलाकात का सम्मान दिया। मुलाकात से हमारे दिल को सुकून मिला है। हज़ूर अनवर ने हमें नसीहत दी कि नमाज कभी न छोड़ें, क्योंकि हम लापरवाह हो जाते थे।"

विलिंगबोरो जमाअत से आए ज़हूर तैयब साहिब ने कहा, "मैं अपनी भावनाओं को बयां नहीं कर सकता। कमरे में मैंने सिर्फ नूर ही नूर देखा। हज़ूर ने मुझसे बहुत प्यार से बात की। मुझे बहुत सुकून मिला। हज़ूर ने मुझे नसीहत दी कि जल्दी शादी कर लो।"

शार्लेट जमाअत से आए शरीफ अहमद साहिब ने कहा, "यह पहली बार था जब मैं हज़ूर अनवर से मिला। यह मेरी जिंदगी का सबसे अच्छा दिन है। अब पता नहीं यह दिन फिर से नसीब होगा या नहीं।" उनकी पत्नी रोने लगीं और कहा, "सारी बरकतें हज़ूर के कदमों में बैठने और जमाअत की सेवा करने में हैं। मुझे जमाअत की वजह से बहुत सी बरकतें मिली हैं। मैंने अपने बच्चों को यही सिखाया है। शेष ...

# इस्लाम और सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मुख़ालिफ़ अलेक्जेंडर डोवी के शहर ज़ायन (zion) से शुरू होने वाली हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की ग़ैरमामूली अहमयित और बरकतों की हामिल ऐतिहासिक अमरीका की यात्रा

## सितंबर, अक्तूबर 2022 ई.

अमेरिका में तैनात सिरा-लियोन के राजदूत और गेम्बिया के राजदूत के सचिव की हज़ूर-ए-अनवर से मुलाकात और विभिन्न विषयों पर चर्चा।

न्यूयॉर्क स्टेट यूनिवर्सिटी के इतिहास विभाग की प्रोफेसर की मुलाकात।

अमेरिका के दूरदराज इलाकों से आए जमाअत के सदस्यों द्वारा अपने प्यारे इमाम से मुलाकात के बाद उनके अनुभव।

एम.टी.ए टेलीपोर्ट का निरीक्षण।

सामूहिक बैअत का ईमान को मज़बूती देने वाला आयोजन।

वाकफात-ए-नौ और वाकफीन-ए-नौ की हज़ूर-ए-अनवर के साथ अलग-अलग मुलाकातें और विविध विषयों पर मार्गदर्शन।

"एक दोस्त, एहतिशामुल हसन साहब, रब्वाह से आए थे। जब उन्होंने अपना परिचय करवाया, तो हज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि आपके भाई और रिश्तेदार तो जर्मनी में भी हैं, यू.के. में भी हैं, और आयरलैंड में भी हैं। उन्होंने कहा कि मैं रब्वाह में एफ.एस.सी कर रहा था और अब यहां आ गया हूं। मेरी कामयाबी के लिए दुआ करें। इस पर हज़ूर अनवर ने फ़रमाया, 'अल्लाह तआला फज़ल फ़रमाए।"

एक दोस्त श्रीलंका से आए थे। उन्होंने कहा कि हमारे केस रिजेक्ट हो गए थे। हज़ूर अनवर की हिदायत पर जमाअत ने हमारे लिए बहुत कोशिश की। अब हम यहां बैठे हैं और शुक्रिया अदा करते हैं। हज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि वहां जो हालात खराब हुए थे, उससे पहले ही आप निकल आए। इस पर उन्होंने अर्ज़ किया कि हां, हम पहले ही आ गए थे।

एक नौजवान ने अर्ज़ किया कि मैं 24 साल का हूं, शादी करके आया हूं, स्कूल का डिप्लोमा ले रहा हूं। फिर आगे और पढ़ाई करनी है। इस पर हज़ूर अनवर ने फ़रमाया, 'अल्लाह तआला कामयाब करे।'

एक दोस्त ने अर्ज़ किया कि मैं पाकिस्तान के वहारी से आया हूं। आज यहां सिर्फ हज़ूर अनवर का दीदार करने आया हूं। एक बुजुर्ग ने माइक पकड़ा और अर्ज़ किया कि मैं पीछे बैठा था। मुझे हज़ूर सही से नजर नहीं आ रहे थे, तो मैंने माइक सिर्फ इसलिए पकड़ा है ताकि खड़ा होकर हज़ूर का दीदार कर सकूं। वरना मेरा कोई प्रश्न या अर्ज़ नहीं है।

एक दोस्त ने अर्ज़ किया कि मेरा बेटा 11 साल से मलेशिया में है। उसके लिए दुआ करें कि अल्लाह तआला उसकी मुश्किलें दूर करे और हमारे मिलने का सामान पैदा करे। हज़ूर ने फ़रमाया, 'अल्लाह तआला फज़ल फ़रमाए।'

एक नौजवान ने अपनी पढ़ाई का वर्णन करते हुए और आगे की पढ़ाई के लिए राय मांगी। इस पर हज़ूर अनवर ने फ़रमाया, 'मेडिसिन करो और दुनिया के काम आओ।'

एक दोस्त ने अर्ज़ किया कि श्रीलंका से आया हूं। यहां काम भी कर रहा हूं। हज़ूर अनवर ने उस नौजवान को हिदायत दी कि शादी कर लो।

एक दोस्त ने बताया कि श्रीलंका में 8 साल रहकर आया हूं। हालात काफी खराब रहे और बहुत मुश्किलों का सामना करना पड़ा। इस पर हज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि जब इस तरह सफर पर निकलते हो तो मुश्किलें आती हैं। अब आप यहां पहुंच गए हो। हमेशा अपने दीन को मुकद्दम रखने का अहद करो। अल्लाह तआला फज़ल फ़रमाता रहेगा। इबादत का हक अदा करो, यह न हो कि अमेरिका आकर दुनिया में डूब जाओ।

एक नौजवान ने अर्ज़ किया कि मैं श्रीलंका से आया हूं। हज़ूर अनवर ने नसीहत करते हुए फ़रमाया, 'शादी करो और हमेशा अल्लाह को याद रखो।'

एक शख्स ने अर्ज़ किया कि मैं बर्मा से आया हूं। यहां रिफ्यूजी केस किया है। वहां लेक्चरर था और अब यहां पीएचडी कर रहा हूं। हज़ूर अनवर ने पूछा कि क्या बीवी-बच्चे साथ हैं। उन्होंने कहा, 'हां, साथ हैं।' हज़ूर ने फ़रमाया, 'अल्लाह तआला फज़ल फ़रमाए।'

एक दोस्त ने हज़ूर अनवर से अपने यहां कयाम के बारे में बात की। हज़ूर ने फ़रमाया, 'अब आप यहां रहना चाहते हैं या वापस जाना चाहते हैं। पैर जमा लो। अगर जॉब की ऑफर हुई है, तो उसे स्वीकार कर लो और यहीं रहो।'

एक बुजुर्ग ने अर्ज़ किया कि मैं पाकिस्तान से आया हूं। मेरी नज़र कमज़ोर होती जा रही है और मेरा दायां घुटना खराब हो गया है, वह काम नहीं करता। इस पर हज़ूर अनवर ने पूछा, 'आपकी उम्र कितनी है?' उन्होंने अर्ज़ किया, '92 साल।' इस पर हज़ूर अनवर ने फ़रमाया, 'फिर तो अब घुटने खराब ही होने हैं।'"

### जमाअत के सदस्यों के अनुभव

मुलाकात करने वाले यह सदस्य मेरीलैंड (Maryland) की स्थानीय जमाअत के अलावा अलग-अलग 27 जमाअतों और इलाकों से आए थे। इनमें से कुछ ने बहुत लंबा और कठिन सफर तय किया था।

Miami से आने वालों ने 1056 मील, Los Angeles से आने वालों ने 2670 मील और Silicon Valley से आने वालों ने 2845 मील का सफर तय कर अपने प्यारे आका से मुलाकात की।

मुलाकात के बाद, एक दोस्त, अतहर अहमद नवीद साहब, जो नॉर्थ वर्जीनिया से आए थे, कहने लगे, "अब मुझे और क्या चाहिए। अल्लाह तआला ने मुझे मुलाकात का सौभाग्य दिया है। मैं अल्लाह से इससे अधिक कुछ नहीं मांग सकता।"

एक और दोस्त, फ़रहान साहब, ने बताया, "जैसे ही हज़ूर आकर तशरीफ़ फ़रमा हुए, दिल की सारी टेंशन दूर हो गई। मुझे तो अपनी सांसों की भी आवाज़ नहीं आ रही थी। मेरे दिल की ख्वाहिश अल्लाह तआला ने पूरी कर दी। मेरे लिए तो यह बहुत बड़ी बात थी।"

नईम अहमद साहब, जो Harrisburg जमाअत से आए थे, कहने लगे, "मैं तो बस हज़ूर को देखता रहा और दुआएं करता रहा। मेरी हज़ूर से मिलने की ख्वाहिश अल्लाह तआला ने पूरी कर दी।"

तक़ी अहमद बाजवा साहब, Harrisburg जमाअत से आए थे। उन्होंने कहा, "मेरे बेटे की उम्र दो साल है। मुझे उसके साथ मुलाकात का मौका मिला। मैंने दुआ के लिए कहा। लेकिन जब मुझे माइक मिला, तो हज़ूर का जलाल इतना था कि मैं कुछ बोल ही नहीं सका।"

एक दोस्त, मोहम्मद अज़हर ताहिर साहब, साउथ वर्जीनिया से आए थे। उन्होंने कहा, "यह मेरी ज़िंदगी की पहली मुलाकात थी। हज़ूर के चेहरे पर बहुत नूर था। उसे देखकर इंसान सब कुछ भूल जाता है। मैंने अपने परिवार के लिए दुआ की अर्ज़ की।"

ज़िया-उर-रहमान साहब, Harrisburg जमाअत से आए थे। उन्होंने कहा, "मैं थोड़ा ऊंचा सुनता हूं, इसलिए आवाज़ साफ नहीं आई। लेकिन मैंने सारा वक्त हज़ूर को ही देखा। मैं अपने जज़्बात और अहसासात वर्णन नहीं कर सकता, यह मेरे शब्दों से बाहर है।"

नासिर समी साहब, नॉर्थ वर्जीनिया से आए थे। उन्होंने कहा, "हज़ूर के सामने ऐसा महसूस हो रहा था जैसे एक 'मजलिस-ए-इरफान' हो रही हो। हज़ूर का यह फ़रमाना कि 'अल्लाह तआला फज़ल करे', हमारे लिए बहुत सुकूनदायक होता है। इससे दिल को बहुत तसल्ली होती है।"

एक युवा, एहतेशामुल हसन साहब, साउथ वर्जीनिया जमाअत से आए थे। उन्होंने कहा, "हज़ूर से मिलने की बहुत ख्वाहिश थी। हज़ूर मुझे दो बार ख्वाब में आ चुके हैं।

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.akhbarbadr.in

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2023-2025 Vol. 10 Thursday 06 February 2025 Issue No. 06

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com
www.alislam.org/badr

मेरे वालिद साहब ने भी ख्वाब में हज़ूर को देखा था। आज मुलाकात में मैंने बस हज़ूर का चेहरा ही देखा। मैंने हज़ूर को अपनी अंगूठी दी। हज़ूर ने अपनी अंगूठी से उसे मसल कर वापस दी। मैं अपने आप को बहुत खुशनसीब इंसान समझता हूं।"

पीर मुइनुद्दीन शाह साहब, फिलाडेल्फिया जमाअत से आए थे। उन्होंने कहा, "हज़ूर ने मुझसे पूछा कि तुम किस इलाके के पीर हो। मैंने अर्ज़ किया कि मैं सूफी अहमद जान साहब के परिवार से हूं। मुझे यह भी नहीं पता था कि मेरे एक करीबी रिश्तेदार, जो हाल ही में अमेरिका आए हैं, वह भी इस मुलाकात में शामिल हैं। हज़ूर ने ही मुझे बताया कि वह यहां मौजूद हैं। यह हज़ूर की बरकत है कि न केवल मेरी हज़ूर से पहली मुलाकात हुई, बल्कि अपने रिश्तेदार से भी पहली बार मिल सका।"

पुरुष सदस्यों के साथ यह समूह मुलाकात शाम 6:45 बजे तक जारी रही।

## लजना इमाइल्लाह के समूह की सामूहिक मुलाकात

इसके बाद हज़ूर-ए-अनवर, अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, लजना हॉल में तशरीफ़ लाए, जहां लजना के समूह ने सामूहिक रूप से हज़ूर-ए-अनवर से मुलाकात का सौभाग्य पाया। इस मुलाकात में कुल 245 महिलाएं और बच्चियां शामिल थीं, जो अमेरिका की विभिन्न 28 जमाअतों से आई थीं।

हज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया कि जो महिलाएं कोई प्रश्न करना चाहती हैं या कुछ कहना चाहती हैं, वे अपने हाथ उठाएं। इस पर महिलाओं ने अपने हाथ उठाए। ज़्यादातर महिलाओं ने अपना परिचय दिया और अपने परिवार का इतिहास बताया। कुछ महिलाओं ने अपने परिवार के लिए दुआ की अर्ज़ की। वहीं, कुछ छात्राओं ने अपनी पढ़ाई के संबंध में हज़ूर-ए-अनवर से मार्गदर्शन की दरख्वास्त की। इनमें हेल्थकेयर, कानून, कृषि, और मेडिकल की छात्राएं शामिल थीं।

कुछ नवविवाहित महिलाओं ने हज़ूर-ए-अनवर से दुआ और नसीहत की अर्ज़ की। कुछ महिलाओं ने अपनी बेटियों के विवाह से संबंधित मामलों पर दुआ की दरख्वास्त की।

कुछ महिलाओं ने अपने सपनों के बारे में बयान किया, जिस पर हज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया कि आपको नियमित रूप से दुरूद शरीफ पढ़ना चाहिए।

महिलाओं के इस समूह की मुलाकात शाम 7:25 पर समाप्त हुई।

## नौमुबाईन के समूह की सामूहिक मुलाकात

इसके बाद हज़ूर-ए-अनवर, अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दोबारा मस्जिद के मर्दाना हॉल में तशरीफ़ लाए, जहां नौमुबाईन के समूह ने हज़ूर-ए-अनवर से मुलाकात का सौभाग्य पाया। (विस्तृत रिपोर्ट यहां देखी जा सकती है।)

यह बैठक रात 8:10 पर समाप्त हुई। इसके बाद हज़ूर-ए-अनवर कुछ समय के लिए अपने कार्यालय में तशरीफ़ ले गए।

रात 8:35 पर हज़ूर-ए-अनवर मस्जिद बैतुर्रहमान तशरीफ़ लाए और वहां नमाज़-ए-मगरिब और नमाज़-ए-ईशा को जोड़कर पढ़ाया। नमाज़ों की अदायगी के बाद, हज़ूर-ए-अनवर अपनी रहाइशगाह पर तशरीफ़ ले गए।

## अमेरिका का सत्रहवां दिन – 12 अक्टूबर 2022, बुधवार

अमेरिका में तैनात सिएरा लियोन के राजदूत और गाम्बिया के राजदूत के सचिव की हज़ूर-ए-अनवर से मुलाकात और विभिन्न विषयों पर चर्चा। न्यूयॉर्क स्टेट यूनिवर्सिटी के इतिहास विभाग की प्रोफेसर की मुलाकात। अमेरिका के दूरदराज इलाकों से आए जमाअत के सदस्यों द्वारा अपने प्यारे इमाम से मुलाकात के बाद उनके अनुभव

## एम.टी.ए टेलीपोर्ट का निरीक्षण।

सामूहिक बैअत का ईमान को मज़बूती देने वाला आयोजन।

वाकफात-ए-नौ और वाकफीन-ए-नौ की हज़ूर-ए-अनवर के साथ अलग-अलग मुलाकातें और विविध विषयों पर मार्गदर्शन।

सुबह 6:15 बजे हज़ूर-ए-अनवर, अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, "मस्जिद बैतुर्रहमान" तशरीफ़ लाए और नमाज-ए-फजर अदा की। नमाज के बाद हज़ूर अपनी रहाइशगाह पर लौट गए।

सुबह के समय, हज़ूर ने दफ़्तरी डाक देखी और विभिन्न प्रशासनिक कार्यों में व्यस्त रहे।

## अमेरिका में तैनात सिएरा लियोन के राजदूत की मुलाकात

प्लान के अनुसार, सुबह 11 बजे हज़ूर-ए-अनवर मीटिंग रूम में तशरीफ़ लाए। यहां अमेरिका में सिएरा लियोन के राजदूत, ऑनरेबल सिद्दीक़ अबूबकर वाई साहब, हज़ूर से मुलाकात के लिए उपस्थित हुए।

राजदूत ने जमाअत का आभार व्यक्त करते हुए कहा, "जमाअत अहमदिया सिएरा लियोन में स्वास्थ्य और शिक्षा के क्षेत्र में लगातार हमारी मदद कर रही है और हमें जमाअत का सहयोग प्राप्त है।"

इस पर हज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया, "यह हमारा कर्तव्य है।"

राजदूत ने बताया कि बचपन में उन्हें अहमदिया स्कूल में दाखिला नहीं मिल सका था क्योंकि वहां दाखिले के लिए मापदंड पर खरा उतरना जरूरी था, और वे उस समय उन मापदंडों को पूरा नहीं कर सके थे।

हज़ूर-ए-अनवर ने देश की अर्थव्यवस्था और आर्थिक स्थिति के बारे में पूछा कि देश की सबसे बड़ी आय का स्रोत क्या है। इस पर राजदूत ने बताया कि सिएरा लियोन एक कृषि प्रधान देश है। हज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया कि आप कृषि पर अधिक ध्यान दें। एक मॉडल फार्म बनाएँ ताकि लोगों को पता चले कि कृषि को और बेहतर कैसे किया जा सकता है। आप लोग पुराने तरीकों पर निर्भर हैं। अब नई तकनीक अपनाएँ। आधुनिक मशीनरी का इस्तेमाल करें और आधुनिक तरीकों से खेती करें।

हज़ूर-ए-अनवर ने कहा कि वहाँ महिलाएँ पुराने औज़ारों की मदद से छोटे स्तर पर कसावा और कुछ अन्य फसलें उगाती हैं। अपनी जरूरत पूरी करने के लिए यह भी ठीक है, लेकिन आपको बड़े पैमाने पर काम करना चाहिए।

हज़ूर-ए-अनवर ने कहा कि सिएरा लियोन की जमीन बहुत उपजाऊ है। हज़ूर-ए-अनवर ने जब यह पूछा तो राजदूत ने बताया कि अमेरिका में सिएरा लियोन के लगभग साढ़े चार लाख लोग रहते हैं। इस पर हज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया कि यह तो एक बड़ी संख्या है।

यह मुलाकात लगभग दस मिनट तक चली। मुलाकात के अंत में राजदूत ने हज़ूर-ए-अनवर अय्यदाहुल्लाह के साथ तस्वीर खिंचवाने का सौभाग्य भी प्राप्त किया।

## प्रोफेसर शोभना शंकर की मुलाकात

इसके बाद तय कार्यक्रम के अनुसार, प्रोफेसर शोभना शंकर ने हज़ूर-ए-अनवर से

शेष पृष्ठ 10 पर

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web.www.alislam.org
www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

CHANDIGARH DIAGNOSTIC LABORATORY
थाने वाला चौक, ठीकरीवाल रोड, नज़दीक केनरा बैंक, पंजाब एंड सिंध बैंक क़ादियान
सभी प्रकार के शारीरिक टैस्ट (खून, मल,बलग़म इत्यादि) कंप्यूटरराइज्ड तरीके से उपलब्ध हैं।
हमारे सहभागी :- SRL (SUPER RANBAXY LABORATORIES), THYROCARE MUMBAI.
चौधरी खिज़र बाजवा दरवेश क़ादियान, लुकमान अहमद बाजवा
और जानकारी के लिए संपर्क करें :- इमरान अहमद बाजवा, रिज़वान अहमद बाजवा
फ़ोन नंबर :-+91-9646561639,+91-8557901648

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad